राजप्रभा

गलता कुण्ड, जयपुर

विभागीय पत्रिका

केंद्रीय वस्तु व सेवाकर एवं सीमा शुल्क, जयपुर

नव केंद्रीय राजस्व भवन, स्टेच्यू सर्किल, जयपुर

स्वाधीनता दिवस समारोह-2019

राजप्रभा

विभागीय पत्रिका

अंक - 26 विक्रम सम्वत्-2076 सन् -2019

संरक्षक
श्री राकेश कुमार शर्मा
मुख्य आयुक्त

प्रधान सम्पादक
श्री प्रमोद कुमार सिंह
प्रधान आयुक्त

प्रबन्ध सम्पादक
श्री बी. एल. मीना
संयुक्त आयुक्त

सम्पादक
श्री सुनील कुमार वंगानी
सहायक आयुक्त

कार्यकारी सम्पादक दल
श्रीमती नीता शुक्ल, वरिष्ठ अनुवादक
श्री अशोक कुमार बिरानियां, कनिष्ठ अनुवादक
श्री हरकेश कुमार मीना, कनिष्ठ अनुवादक
श्री मानसिंह गुर्जर, कर-सहायक

केवल विभागीय प्रयोगार्थ

1. पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में अभिव्यक्त विचारों से सम्पादक मण्डल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।
2. पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ मौलिक ही हैं ऐसा सुनिश्चित करना सम्पादक मण्डल के लिए संभव नहीं है।

अनुक्रमणिका

1.	संदेश	3–5
2.	संरक्षक की कलम से	6
3.	प्रधान सम्पादक की कलम से	7
4.	संदेश	8–13
5.	प्रबन्ध सम्पादक की कलम से	14
6.	सम्पादक की कलम से	15
7.	नराकास, जयपुर द्वारा प्रदत्त पुरस्कार	16
8.	उत्तर–पूर्व : सौंदर्य का खजाना	17–19
9.	राजभाषा विभाग द्वारा प्रदत्त पुरस्कार	20
10.	विद्या ददाति विनयम्–फल भरे वृक्ष झुकते हैं	21
11.	दुर्योधन अभी जिंदा है	22
12.	ग़ज़ल	22
13.	पाखी	23–25
14.	मां की दुनिया	26
15.	लघु कहानियां	27–28
16.	मोक्ष	29
17.	उजियारा	30–31
18.	लम्हों की दास्तान	32
19.	छोटी सी प्रतिज्ञा	32
20.	जी.एस.टी. दिवस समारोह की झलकियां	33–39
21.	विश्व सीमा शुल्क संगठन द्वारा आयोजित कार्यक्रम	40
22.	अन्तर्राष्ट्रीय सीमा शुल्क दिवस 2019	41
23.	अदर्स डे पे 'मदर्स' को समर्पित	42
24.	माईनस जीरो, वेलेंटाइन	42
25.	रोग मुक्त रहने के लिए टहलिए	43
26.	मेरी जीवनसंगिनी	44
27.	मुफ़्त की रोटियां	45–46
28.	फ़र्क सोच का	46
29.	कर्ण का दुर्भाग्य	47
30.	प्राकृतिक चिकित्सा एवं स्वास्थ्य	48–49
31.	कुछ अलग है	49
32.	मैं कलम की धार हूँ	50
33.	शर्मा जी का लड़का	51–52
34.	टिप्पण आलेखन प्रोत्साहन पुरस्कार	53–55
35.	राजभाषा समारोह	56–57
36.	अन्तर्राष्ट्रीय सीमा शुल्क दिवस	58–59
37.	अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस	60
38.	खेलकूद	61
39.	बालचित्र	62–63
40.	गोड़ावण का लोकार्पण कार्यक्रम	64
41.	शौर्य गाथा	65
42.	विश्व सीमा शुल्क संगठन द्वारा जयपुर में आयोजित रणनीतिक कार्य योजना : एक रिपोर्ट	66
43.	नव ऊर्जा, गज़ल	67
44.	जीएसटी के दो साल बेमिसाल	67
45.	स्वच्छ भारत अभियान – राजनीतिक, आर्थिक व सामाजिक पहलू का विश्लेषण	68–69
46.	कहानी मेरी सी	70
47.	जिन्दगी की सीख, ले चला दिल कहां...	71
49.	हिन्दी टिप्पण–आलेखन एवं मसौदा लेखन प्रोत्साहन योजनाएँ	72–73
50.	राजभाषा पखवाड़ा 2018 : एक रिपोर्ट	74–75
51.	जीएसटी दिवस समारोह–2019 के उपलक्ष्य में दिनांक 3.7.2019 को आयोजित रक्तदान शिविर में रक्तदाताओं के नाम	76

सत्यमेव जयते

अध्यक्ष
केंद्रीय अप्रत्यक्ष कर एवं सीमा शुल्क बोर्ड
नई दिल्ली

संदेश

केन्द्र सरकार के कार्यालयों में राजभाषा के प्रचार-प्रसार हेतु कई प्रोत्साहन योजनाएं एवं गतिविधियों का संचालन किया जाता है। इस कड़ी में हिंदी पत्रिकाएँ भी अहम रोल अदा करती हैं। इनका प्रकाशन जहाँ एक ओर हिंदी के विकास, संवर्धन एवं प्रचार-प्रसार में महत्त्वपूर्ण योगदान देता है वहीं दूसरी ओर रचनाकारों को एक सशक्त मंच भी उपलब्ध करवाता है।

अपने इन्ही पावन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए केन्द्रीय वस्तु एवं सेवाकर तथा सीमा शुल्क, जयपुर द्वारा प्रकाशित की जाने वाली पत्रिका राजप्रभा के सफल प्रकाशन के लिए मैं हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ कि यह पत्रिका पूर्ण रूप से अपने उद्देश्यों को प्राप्त करते हुए नित नई बुलंदियों को छुए।

(प्रणब कुमार दास)

सत्यमेव जयते

विशेष सचिव एवं सदस्य
केंद्रीय अप्रत्यक्ष कर एवं सीमा शुल्क बोर्ड
नई दिल्ली

संदेश

राजभाषा के प्रति हमारी संवैधानिक आवश्यकताओं एवं नैतिक दायित्वों को पूरा करने में विभागीय पत्रिकाओं का महत्त्वपूर्ण स्थान होता है। इसी दायित्व के अनुरूप राजप्रभा के इस अंक का प्रकाशन किया जाना विभाग के अधिकारियों एवं कर्मचारियों का हिंदी के प्रति प्रेम एवं सम्मान की झलक प्रस्तुत करता है।

मुझे आशा है कि यह पत्रिका भविष्य में भी अपनी सृजनात्मक अभिव्यक्ति द्वारा अपने दायित्वों को पूरा करने में पूर्ण रूप से सफल होगी।

(अशोक कुमार पाण्डे)

सत्यमेव जयते

विशेष सचिव एवं सदस्य
केंद्रीय अप्रत्यक्ष कर एवं सीमा शुल्क बोर्ड
नई दिल्ली

संदेश

मेरे लिए यह व्यक्तिगत प्रसन्नता का विषय है कि केंद्रीय वस्तु एवं सेवाकर तथा सीमा शुल्क, जयपुर से अनवरत रूप से विभागीय हिंदी पत्रिका राजप्रभा का प्रकाशन जारी है। यह पत्रिका अपने नाम की सार्थकता सिद्ध करते हुए हिंदी के प्रचार-प्रसार में अहम योगदान देते हुए अपनी प्रभा चारों दिशाओं में फैला रही है। पत्रिका के निरंतर प्रकाशन से यह भी प्रकट होता है कि इस कार्यालय में राजस्व संग्रहण की तरह हिंदी के संवर्धन को भी अहम स्थान दिया गया है।

मैं पत्रिका की सफलता की कामना करते हुए सभी को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं देता हूँ।

(डॉ. जोन जोसेफ)

सत्यमेव जयते

मुख्य आयुक्त
केंद्रीय वस्तु एवं सेवाकर (जयपुर जोन)
जोन

संरक्षक की कलम से

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि केंद्रीय वस्तु एवं सेवाकर तथा सीमा शुल्क, जयपुर द्वारा ' राजप्रभा ' का निरंतर प्रकाशन किया जा रहा है। भारतवर्ष में ऐतिहासिक, भौगोलिक, पर्यावरणीय तथा सांस्द्रतिक विविधताओं के साथ-साथ भाषायी विविधता भी अपने आप में एक महत्त्वपूर्ण कारक है। इतनी सारी विविधताओं के बावजूद भी 'विविधता में एकता' भारतवर्ष को एक अलग पहचान देती है। ' विविधता में एकता ' का यह गुण भाषा के क्षेत्र में भी परिलक्षित होता है तथा भाषा के क्षेत्र में 'विविधता में एकता' का यह कार्य राजभाषा हिंदी के द्वारा किया गया है।

वर्तमान समय में हिंदी अपने बहुआयामी क्षितिज स्वयं रच रही है तथा कार्यालय तथा बाजार में भी इसका प्रयोग दिनों-दिन बढ़ता जा रहा है। इस जोन के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के द्वारा भी हिंदी को पूर्ण सम्मान देते हुए कर्मठता के साथ कार्य किया जाता है।

पत्रिका के सफल प्रकाशन की शुभकामनाएं देते हुए मैं आशा करता हूँ कि पत्रिका का यह अंक भी विभाग में राजभाषा के व्यावहारिक पक्ष को मजबूत करने में सफल सिद्ध होगा।

(राकेश कुमार शर्मा)

सत्यमेव जयते

प्रधान आयुक्त
केन्द्रीय वस्तु एवं सेवाकर आयुक्तालय
जयपुर

प्रधान संपादक की कलम से

मेरे लिए यह प्रसन्नता का विषय है कि मैं आपके कर-कमलों में विभागीय पत्रिका ' राजप्रभा ' का 26वाँ अंक सौप रहा हूँ। मेरे लिए विशेष सौभाग्य की बात यह भी है कि मुझे उस पत्रिका का प्रधान संपादक बनने का अवसर मिला है जिसने अपने रजत अंक के सोपान को सफलतापूर्वक पूर्ण कर लिया है। वास्तव में 'राजप्रभा' पत्रिका ने 'यथा नाम तथा गुण' की सार्थकता को सिद्ध करते हुए अपनी प्रभा चारों ओर फैलाई है। किसी भी पत्रिका के लिए यह गौरव का विषय होता है जिसने अपने रजत अंक के सफल प्रकाशन के बाद स्वर्ण अंक की ओर कदम बढ़ा दिए है।

किसी भी पत्रिका का मूल उद्देश्य यह होता है कि अधिकारियों एवं कर्मचारियों के मध्य यह संदेश प्रसारित हो कि राजभाषा का प्रयोग करना सरल है। 'राजप्रभा' भी इसी संदेश को प्रचारित करने में पूर्ण रूप से सक्षम हुई है। एक आदर्श पत्रिका में जो गुण होते हैं उन सभी गुणों को सम्यक रूप से पत्रिका के इस अंक में प्रतिबिम्बित करने का प्रयास किया गया है।

पत्रिका के माध्यम से विभागीय अधिकारियों के सृजनात्मक विचारों को लिपिबद्ध करने का प्रयास किया गया है। इनका यह प्रयास राजभाषा के प्रति अगाढ़ प्रेम का परिचायक है। इनके इन प्रयासों से अन्य अधिकारियों एवं कर्मचारियों को भी प्रेरणा लेकर राजभाषा के प्रति पूर्ण निष्ठा के साथ कार्य करने का प्रण लेना चाहिए।

आशा है कि पत्रिका का यह अंक भी आप सभी को पसंद आएगा।

(प्रमोद कुमार सिंह)

सत्यमेव जयते

आयुक्त
केंद्रीय वस्तु एवं सेवाकर अपील आयुक्तालय
जयपुर

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि विभागीय पत्रिका 'राजप्रभा' के 26वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है । इसमें अपनी रचनाओं के माध्यम से विभागीय अधिकारियों एवं उनके परिवार के सदस्यों ने राजभाषा के प्रति अपना प्रेम और सम्मान व्यक्त करके इसके विकास का पथ- प्रदर्शन किया है । मेरी कामना है कि राजभाषा निरंतर पुष्पित-पल्लवित होकर श्रेष्ठता की ओर अग्रसर होती रहे तथा सभी वर्ग के अधिकारीगण इसी प्रकार अपने दैनिक कार्यों में राजभाषा का प्रयोग करके इसके विकास में इसी प्रकार अपना योगदान देते रहें ।

मैं पत्रिका की सफलता की कामना करते हुए सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को शुभकामनाएं देता हूं ।

सीआरमीना

(सी.आर.मीना)

सत्यमेव जयते

आयुक्त
केंद्रीय वस्तु एवं सेवाकर आयुक्तालय
अलवर

संदेश

विभागीय पत्रिका 'राजप्रभा' के इस अंक प्रकाशन का हिस्सा होना मेरे लिए गौरव की बात है। मुझे खुशी है कि कार्यालय के अधिकारी एवं कर्मचारी राजस्व कार्यों के प्रति जितने सजग एवं कर्मठ हैं वहीं राजभाषा के प्रति भी सच्ची निष्ठा व आत्मीय लगन रखते हैं जो कि उनके राजभाषा में निष्पादित किए जाने वाले दैनिक कार्यों से साफतौर से परिलक्षित है ।

'राजप्रभा' का निरंतर प्रकाशन राजभाषा की बढ़ती गरिमा का प्रतीक ही नहीं अपितु कार्यालय के सदस्यों में राजभाषा एवं राष्ट्र के प्रति प्रगाढ़ प्रेम को साकार करता है।

पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएं ।

चन्द्र प्रकाश गोयल

(चन्द्र प्रकाश गोयल)

सत्यमेव जयते

आयुक्त
केंद्रीय वस्तु एवं सेवाकर आयुक्तालय
उदयपुर

संदेश

विभागीय पत्रिका 'राजप्रभा' के 26वें अंक के प्रकाशन के अवसर पर मुझे अपार हर्ष की अनुभूति हो रही है।

मुझे आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि यह पत्रिका राजभाषा के उत्तरोत्तर विकास एवं सभी वर्ग के अधिकारियों के विचारों की अभिव्यक्त का माध्यम बनने के साथ ही राजभाषा हिन्दी के वांछित लक्ष्यों को प्राप्त करने की दिशा में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाएगी।

मैं सभी अधिकारियों व कर्मचारियों तथा उनके परिवार के सदस्यओं के साथ-साथ संपादक मंडल को अपनी हार्दिक बधाई देता हूं।

आलोक

(आलोक गुप्ता)

सत्यमेव जयते

आयुक्त
सीमा शुल्क (निवारक), जोधपुर
मुख्यालय–जयपुर

संदेश

यह बहुत खुशी की बात है कि केन्द्रीय वस्तु एवं सेवाकर एवं सीमा शुल्क, जयपुर की विभागीय पत्रिका ''राजप्रभा'' का 26वां अंक प्रकाशित किया जा रहा है । यह पत्रिका हमारे विभाग के सहस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों के हिंदी के प्रति रूचि तथा रूझान का प्रतीक है ।

हिन्दी का प्रचार–प्रसार एवं संवर्धन करना हमारा संवैधानिक दायित्व होने के साथ–साथ नैतिक दायित्व भी है और इस दायित्व को पूरा करने के क्रम में पत्रिका का निरंतर प्रकाशन निश्चित ही प्रशंसनीय है। इस जोन में हिन्दी में कार्य करने हेतु एक ऐसा वातावरण है तैयार जिससे सभी अधिकारी एवं कर्मचारी सहज एवं सरल रूप से आसानी से हिन्दी में अपने विचारों को अभिव्यक्त कर रहे हैं तथा हिन्दी के प्रचार–प्रसार में उत्कृष्ट भूमिका निभा रहे हैं ।

मैं पत्रिका के सरल प्रकाशन की कामना करते हुए पत्रिका के प्रकाशन से जुडे हुए सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को अपनी हार्दिक बधाई प्रेषित करता हूं।

(सुभाष चन्द्र अग्रवाल)

सत्यमेव जयते

आयुक्त
केंद्रीय वस्तु एवं सेवाकर आयुक्तालय
जोधपुर

संदेश

यह अत्यधिक हर्ष का विषय है कि विभाग में राजभाषा के प्रयोग को प्रोत्साहित करने के लिए विभागीय हिन्दी पत्रिका 'राजप्रभा' का प्रकाशन नियमित किया जा रहा है ।

हिन्दी भाषा अत्यंत सहज एवं सरल भाषा है जो कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक आसानी से बोली व समझी जाती है ।मुझे इस बात की हार्दिक प्रसन्नता है कि आज हम हिन्दी की प्रगति एवं प्रगति एवं विकास यात्रा में अपनी सहभागिता दे पा रहे हैं एवं जिसका प्रतिफल हमारे समक्ष है ।

मैं पत्रिका के सफल प्रकाशन तथा उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूं ।

(सुग्रीव मीना)

सत्यमेव जयते

आयुक्त
केंद्रीय वस्तु एवं सेवाकर अंकेक्षण आयुक्तालय
जयपुर

संदेश

विभागीय पत्रिका राजप्रभा से जुडने का जो सुखद अवसर मिला है उससे मुझे हार्दिक प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है ।

भारत एक बहुभाषी देश है तथा इसकी समस्त भाषाएं इस देश की बहुरंगी संस्द्धति एवं सभ्यता की परिचायक हैं तथा इन सभी भाषाओं के बीच राजभाषा हिन्दी का एक विशिष्ट स्थान है ।

इस पत्रिका की प्रगति एवं निरंतर विकास की कामना करते हुए मैं यह अपेक्षा करता हूं कि हम सब हिन्दी के प्रयोग को बढावा देने के लिए हमेशा प्रयासरत रहेंगे तथा सरकारी कामकाज में अधिक से अधिक हिन्दी का ही प्रयोग करेंगे।

मैं कामना करता हूं कि पूर्व अंकों की तरह पत्रिका का यह अंक भी अपार सफलता प्राप्त करे ।

शुभकामनाओं के साथ

(महेन्द्र पाल)

सत्यमेव जयते

संयुक्त आयुक्त
केंद्रीय वस्तु एवं सेवाकर आयुक्तालय
जयपुर

प्रबंध संपादक की कलम से

विभागीय पत्रिका ' राजप्रभा ' के प्रकाशन के प्रबंध संपादक के रूप मेरा प्रथम प्रयास 2017 में एवं द्वितीय प्रयास वर्ष 2018 में आपके समक्ष प्रस्तुत किया गया था । विगत अंको के लिए आप सभी के द्वारा मुक्त कंठ से प्रशंसा करने के साथ-साथ सकारात्मक सुझाव भी दिए गए है। इसके लिए आप सभी को मैं को तहेदिल से धन्यवाद देता हूँ। आपके सुझावों को ध्यान में रखते हुए राजप्रभा के प्रबंध संपादक के रूप में मेरा यह तीसरा प्रयास आप सभी के समक्ष प्रस्तुत है।

प्राचीन समय से ही राजस्थान की भूमि पर अनेक वीरों ने जन्म लिया है जो अपनी आन, बान और शान के लिए जाने जाते रहे हैं। राजस्थानी वीरों द्वारा अपनी मातृभूमि, मातृभाषा एवं अपनी संस्कृति के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया था। वर्तमान पीढ़ी भी इन्हीं के पदचिह्नों पर चल रही है तथा आने वाली पीढ़ी के द्वारा भी इसका अनुसरण करना लाजमी है। मातृभाषा प्रेम के कारण ही विश्व के सभी कोनों में बसे राजस्थानियों ने विदेशों में भी अपनी संस्कृति एवं भाषा को जीवंत बनाकर रखा है। जयपुर जोन से प्रकाशित होने वाली विभागीय पत्रिका 'राजप्रभा' के नियमित प्रकाशन से यहां के अधिकारियों एवं कर्मचारियों का हिंदी भाषा के प्रति गहन जुड़ाव प्रत्यक्ष रूप से प्रमाणित होता है।

पत्रिका के इस अंक को भी पूर्व के अंकों की भाँति बहुरंगी कलेवर प्रदान करने के लिए कहानी, लेख, कविताएं, यात्रा वृत्तांत , विभागीय गतिविधियों के फोटोग्राफ्स आदि को शामिल किया गया है।

पत्रिका के प्रकाशन में पत्रिका के कार्यकारी संपादक मंडल द्वारा अपना उत्कृष्ट योगदान दिया गया है जिसके लिए वे साधुवाद के पात्र है। पत्रिका को अपनी लेखनी से अलंकृत करने वाले रचनाकारों का भी मैं आभार व्यक्त करता हूँ एवं भविष्य में भी आपके सकारात्मक सहयोग की अपेक्षा करता हूँ।

जय हिंद, जय हिंदी।

(बी. एल.मीना)

सत्यमेव जयते

सहायक आयुक्त
केंद्रीय वस्तु एवं सेवाकर, आयुक्तालय
जयपुर

संपादक की कलम से

कोई भी भाषा अनेक आयाम लिए हुए होती है। भाषा को सीमाओं में बाँधना संभव नहीं है। भाषा तो अथाह समुद्र तथा असीम आकाश के समान होती है जो भी भाषा के सम्पर्क में आता है इसी में समाकर एकाकार हो जाता है। राजभाषा हिंदी भी अपने इसी गुण के कारण सम्पूर्ण भारत को एकता के सूत्र में बाँधे हुए है। राजभाषा द्वारा पूरे देश को एकता के सूत्र में बाँधने का जो पवित्र यज्ञ किया जा रहा है उस यज्ञ में आहुतियाँ देने हेतु समस्त देशवासियों को भी आगे आकर अपना कर्त्तव्य निभाना होगा ताकि राजभाषा हिंदी की प्रगति अविरल गंगा की तरह बहती रहे।

अब बात करते है राजप्रभा की । राजप्रभा का यह नूतन अंक असीम पुलकित मन एवं गौरवान्वित हृदय से सभी सुधी पाठकों को सादर समर्पित है। इस पत्रिका का संपादक होना मेरे लिए व्यक्तिगत रूप से बहुत गौरवपूर्ण होने के साथ – साथ महत्त्वपूर्ण भी है। इसके लिए मैं अपने आप को सौभाग्यशाली मानता हूँ कि मुझे पत्रिका का संपादन करने की महत्त्वपूर्ण जिम्मेदारी मिली। हिन्दी हमारी मातृभाषा होने के साथ–साथ अपनी सहजता, सरलता एवं एकरूपता के लिए विश्व भर में प्रसिद्ध है। यह सभी के द्वारा आसानी से बोली और समझी जाने वाली भाषा है तथा यह संपूर्ण राष्ट्र को एकता के सूत्र में बांधने का कार्य बहुत ही बेहतर तरीके से कर रही है। मुझे आशा है कि यह पत्रिका हिन्दी के विकास, संवर्धन एवं प्रचार–प्रसार में महत्त्वपूर्ण योगदान देगी तथा इससे कार्यालय में भी राजभाषा हिन्दी के प्रयोग को प्रोत्साहन मिलेगा तथा हिन्दी कार्यों में वृद्धि होगी ।

साथियों, सम्पादक के रूप में मेरे प्रथम प्रयास में इस बात का ध्यान रखा गया है कि राजप्रभा के इस अंक को भी सुंदर एवं रोचक कलेवर में प्रस्तुत किया जाए । इस प्रयास में कितना सफल रहा हूँ यह तो आपसे मिली प्रतिक्रियाओं के बाद ही पता लग सकेगा। पत्रिका के प्रकाशन हेतु बहुत सारी रचनाएं प्राप्त हुई हैं परंतु सीमाओं की मर्यादा के कारण सभी रचनाएं प्रकाशित करना संभव नहीं हो सका हैं। जिन रचनाकारों की रचनाएं शामिल नहीं की जा सकी है उसके लिए मुझे खेद है।

राजभाषा नीति के अनुपालन की दिशा मौलिक रचनाओं को ही प्राथमिकता दी गई है । इसे समग्र कलेवर प्रदान करने हेतु कविताओं, लघु कथाओं, विभागीय गतिविधियों, स्वास्थ्य संबंधी लेखों तथा ज्ञानवर्धक रचनाओं को भी शामिल किया गया है। पत्रिका के प्रकाशन में आयुक्तगणों का योगदान देना भी उनका राजभाषा प्रेम का परिचायक है। वरिष्ठ स्तर के अधिकारियों की रचनाओं का प्रकाशन होना मेरे लिए निश्चित ही प्रेरणादायी है। इसके लिए में इनका विशेष आभारी हूँ।

मैं प्रधान संपादक श्री प्रमोद कुमार सिंह, प्रधान आयुक्त महोदय द्वारा दिए गए मार्गदर्शन एवं सहयोग के लिए हार्दिक धन्यवाद देता हूँ जिससे पत्रिका को संपादन करने का यह प्रयास परिणाम के रूप में परिलक्षित हो सका । कार्यालय में सभी स्तर के अधिकारी एवं कर्मचारीगण प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से पत्रिका से जुड़े हुए हैं और भविष्य में भी इसी तरह आपका सहयोग मिलता रहेगा ।

वन्दे मातरम

सुनीलकुमार

(सुनील कुमार वंगानी)

वर्ष 2018-19 में हिन्दी में श्रेष्ठ कार्य करने पर नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, जयपुर (के.का.-1) द्वारा प्रदत्त पुरस्कार

'ख' वर्ग में केंद्रीय वस्तु एवं सेवाकर
अंकेक्षण आयुक्तालय,
जयपुर को प्रदत्त प्रथम पुरस्कार प्राप्त करते हुए
श्री महेन्द्र पाल, आयुक्त

'क' वर्ग में सीमा शुल्क (निवारक) आयुक्तालय,
जोधपुर, मुख्यालय-जयपुर को प्रदत्त
द्वितीय पुरस्कार प्राप्त करते हुए
श्री सुभाष चन्द्र अग्रवाल, आयुक्त

'क' वर्ग में केंद्रीय वस्तु एवं सेवाकर
आयुक्तालय, जयपुर को प्रदत्त सांत्वना पुरस्कार
प्राप्त करते हुए
श्री बी. एल. मीना, संयुक्त आयुक्त

उत्तर पूर्व (North-East) : सौन्दर्य का खजाना

महेन्द्र पाल, आयुक्त, केंद्रीय वस्तु एवं सेवाकर अंकेक्षण आयुक्तालय, जयपुर

केंद्र सरकार की सेवा में वर्ग 'अ' के अधिकारियों को समस्त भारत में पदस्थापित किया जा सकता है। पदस्थापना के इसी क्रम में जून, 2017 में मेरा स्थानांतरण केंद्रीय वस्तु एवं सेवाकर, केंद्रीय उत्पाद शुल्क एवं सीमा शुल्क, गुवाहाटी में आयुक्त (अपील) के पद पर हुआ। इसी दौरान मुझे भारत के सात उत्तरी-पूर्वी राज्यों मेघालय, अरूणाचल प्रदेश, नागालैंड, मणिपुर, मिजोरम, त्रिपुरा एवं असम में कार्य करने एवं भ्रमण करने का अवसर मिला। मेरे क्षेत्राधिकार में उत्तर-पूर्व के इन सातों राज्यों के अपर आयुक्त एवं अन्य अधिकारियों द्वारा जारी किए गए न्यायनिर्णय आदेश के खिलाफ सुनवाई करना था। अत: कार्य के सिलसिले में मुझे अक्सर ही इन राज्यों का दौरा करना होता था। कार्य समाप्ति के बाद एवं छुट्टी के दिन मैं अक्सर पर्यटन स्थलों का भ्रमण करने निकल जाया करता था। सात बहनों (Seven Sisters) के नाम से जाने वाले भारत के ये राज्य सौन्दर्य का अतुल्य खजाना हैं। इन राज्यों के पर्यटन स्थलों की स्मृतियां अभी भी मेरे दिलो-दिमाग में एक शीतल बयार की तरह बहकर इसे तरोताजा कर देती हैं। तो आइए, मैं अपने यात्रा वृत्तांत के माध्यम से सबसे पहले आपको सैर करवाता हूँ मेघालय राज्य की।

मेघालय :

मेघालय का शिलाँग क्षेत्र हरी-भरी पहाड़ियों एवं घाटियों का समूह है और मुझे इस क्षेत्र में कई बार जाने का अवसर मिला। कई बार घूमने के बाद भी मेरा मन यहाँ बार-बार आने के लिए आतुर होता है। मैं जितनी बार भी मेघालय के पर्यटक स्थलों का दौरा करता तो हमेशा ही मुझे एक नया अनुभव होता। मेघालय की राजधानी शिलांग में बहुत सारे पर्यटन स्थल हैं, जिनमें से कई स्थानों की यादे मेरे दिलो-दिमाग में एक चलचित्र की भाँति घूम जाती है।

मेरी स्मृतियों में एशिया का सबसे स्वच्छ गांव-मॉवलीनाँग सबसे पहले समाया हुआ है। बांग्लादेश बॉर्डर पर स्थित एशिया के सबसे स्वच्छ गांव में जाने का अवसर मुझे पहले भी प्राप्त हुआ था, लेकिन अगस्त, 2018 में नॉर्थ ईस्ट के साथी आयुक्तगण के साथ जाने का जो अवसर प्राप्त हुआ वह मेरी जिंदगी का सुखद एवं अविस्मरणीय अनुभव रहा है।

मेघालय की यात्रा के दौरान नॉर्थ ईस्ट क्षेत्र में स्थित सीमा शुल्क (निवारक) आयुक्तालय में पदस्थापित साथी आयुक्तगण ने कहा कि यदि शहरों की भीड़भाड़ से दूर एक सुंदर, शांत और स्वच्छ जगह घूमने की तलाश चाहते हो तो हमें मॉवलीनाँग गाँव जाना चाहिए। इस प्रकार उनके कहने पर डोकी बॉर्डर और मावलीनाँग का कार्यक्रम तय हुआ। यह एक सुखद आश्चर्य है कि जहाँ विश्व के प्रदूषित शहरों की सबसे ज्यादा संख्या भारत में है वहीं एशिया का सबसे साफ-सुथरा गाँव भी हमारे भारत में ही

Double Decker Live Root Bridge

Single Live Root Bridge

है। पूरे गाँव में हर जगह कचरा डालने के लिए बाँस के कचरा पात्र बने हुए है। सचमुच, यहाँ के सफाई पसंद ग्रामवासी पूरे विश्व के लिए अपने आप में मिसाल एवं प्रेरणादायी है।

मॉवलीनाँग के पास में ही पेड़ की जड़ों से प्राकृतिक तरीके से जोड़कर Live Root Bridge भी तैयार किया गया है। पेड़ों की जड़ों से बने ये प्राकृतिक पुल समय के साथ मजबूत होते जाते है। मेघालय में ही चेरापूंजी क्षेत्र में एक Double Decker Live Root Bridge है जिस तक पहुंचने के लिए लगभग 3500 सीढ़ियां चढ़नी तथा उतरनी पड़ती हैं तथा वहां तक पहुंचने के लिए दो-तीन सस्पेंसन पुल तथा कई घाटियां भी पार करनी पड़ती हैं।

प्रकृति द्वारा निर्मित इस प्रकार के शानदार नजारे को देखने पर हमारी आँखे फटी की फटी रह जाती है। यहाँ वातावरण बहुत रमणीय और शुद्ध वायु-प्रवाह वाला है। रास्ते में बहते हुए निर्मल जल के झरनों को देखकर हम सभी को असीम आंनद की अनुभूति हुई। इसी तरह डॉकी बार्डर पर डॉकी नदी का जल कांच की तरह पारदर्शी है, जिसमें पर्यटक नौका विहार करते हैं। यहाँ से इन पर्यटकों को नदी के दूसरे छोर पर बांग्लादेश वासियों का अभिनंदन करते हुए भी देखा जा सकता है।

अरूणाचल प्रदेश :

मेघालय की यात्रा के बाद अब हम चलते हैं अरूणाचल प्रदेश के सुरमयी क्षेत्रों की ओर। अरूणाचल प्रदेश को 'उगते सूरज की धरती' भी कहा जाता है। दरअसल यहां सूर्योदय चार बजे हो जाता है। इस संबंध में खास बात यह है कि यहाँ सूर्योदय की लालिमा रात के तीन बजे से ही दिखाई देने लग जाती है और तो और जब दिल्ली में दोपहर के चार बजते हैं तो यहां पर रात हो जाती है।

अरूणाचल प्रदेश का सबसे सुरमयी स्थल तवांग क्षेत्र चीन के बॉर्डर के पास स्थित है। यह भारत के सबसे बड़े बौद्ध मठ के लिए भी जाना जाता है। तवांग के अद्वितीय प्राकृतिक सौंदर्य से पर्यटक बरबस ही यहाँ खिंचे चले जाते हैं तो भला हम पीछे क्यों रहते। तवांग क्षेत्र में जाने के लिए पूर्ण रूप से बर्फ से ढ़के हुए सेलापास से गुजरना पड़ता है। इसकी ऊंचाई लगभग 14,000 फुट है। यहाँ पर पहुँचने के लिए ऊँची-ऊँची चोटियों तथा गहरी घाटियों से होकर गुजरना पड़ा। इस दौरान शरीर में डर के साथ-साथ जो रोमांच का अनुभव होता है उसे शब्दों में बयाँ करना मुश्किल है। तवांग क्षेत्र में ही संघस्टर नामक एक झील है जहां पर कोयला फिल्म की शूटिंग हुई थी, इस फिल्म की नायिका 'माधुरी दीक्षित' के नाम पर अब इसे 'माधुरी लेक' के नाम से भी जाना जाता है।

नागालैंड :

नागालैंड की यात्रा शांति एवं सुकून की चाह रखने वाले सैलानियों के लिए शानदार विकल्प है। नागालैंड का सुहावना मौसम यहाँ के पर्यटन में बहुत बड़ा योगदान देता है। नागालैंड में आयुक्त का कार्यालय मैदानी क्षेत्र

दीमापुर में स्थित है। यह क्षेत्र नागालैंड का वाणिज्यिक हब भी है। नागालैंड की राजधानी कोहिमा से दीमापुर लगभग 74 किलोमीटर दूर प्रकृति की सुरम्य वादियों में बसा हुआ है। कोहिमा का प्रसिद्ध होरनीबल उत्सव बहुत ही धूमधाम से मनाया जाता है। इस उत्सव में शामिल होने के लिए देश-विदेश से हजारों पर्यटक पहुँचते हैं। कोहिमा के आस-पास एक से बढ़कर एक सैंकड़ों दर्शनीय स्थलों की भरमार हैं। यहां की शुद्ध वायु और स्वच्छ वातावरण से मन शांत और हर्षित होता है।

मणिपुर :

भारत के संवेदनशील सीमावर्ती राज्य मणिपुर की चर्चा किए बिना सात बहनों का यह यात्रा वृत्तांत अधूरा है। यहाँ के लोग मार्शल आर्ट्स, नृत्य एवं मूर्तिकला में बड़ी रूचि रखते हैं। इस जगह का आकर्षण सामान्य जलवायु है। मन लुभाने वाले प्राकृतिक दृश्य, पहाड़ों पर छाई हरियाली, विलक्षण फूल-पौधे तथा लहराती नदियाँ मणिपुर में सैलानियों को स्वर्ग की सी अनुभूति करवाती हैं। मणिपुर की राजधानी इंफाल के पास ही सैलानियों से हमेशा आबाद रहने वाली लोकटक नामक झील है। इम्फाल से करीब लगभग 90 किलोमीटर दूर म्यांमार बॉर्डर पर भारत का अंतिम शहर मौरे स्थित है जहां से भारत एवं म्यांमार के बीच अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार होता है।

मिजोरम :

मिजोरम की राजधानी आइजोल पर्वतीय नगर है। यह मिजोरम का एक धार्मिक और सांस्कृतिक केंद्र है। यहाँ पर हर प्रकार के पक्षी और वन्य प्राणी देखने को मिलते है। आइजोल एयरपोर्ट के चारों तरफ भी पहाड़ियां है और केवल छोटे से मैदान में एयपोर्ट बना हुआ है। मिजोरम में हमने घाटियों तथा पहाड़ियों के अलावा दर्शनीय स्थल सोलोमन टेंपल व मिनी ताजमहल के दर्शन का आनंद लिया।

त्रिपुरा :

त्रिपुरा की राजधानी अगरतला बांग्लादेश के बॉर्डर पर बसी हुई है। यहां के एयरपोर्ट की दीवार बांग्लादेश के बॉर्डर से लगी हुई है। यहां के दर्शनीय स्थलों में अगरतला से लगभग 50 किलोमीटर दूर उदयपुर में त्रिपुरासुंदरी का भव्य मंदिर हैं। इसके अलावा नीरमहल पैलेस, रूद्रसागर लेक, उजयन्ता पैलेस आदि अनेक पर्यटन स्थलों का भी आनंद लिया जा सकता है।

असम :

असम में स्थित 'काजीरंगा नेशनल पार्क' में भ्रमण करने का जो अवसर मिला वह भी मेरे मन-मस्तिष्क में स्थायी रूप से अंकित हो गया है। काजीरंगा नेशनल पार्क में बहुतायतता से पाए जाने वाले यहाँ के प्रमुख आकर्षण का केंद्र 'एकसींगा गैंडा' को देखने का अवसर भी मिला। विश्व प्रसिद्ध गुवाहाटी का कामाख्या देवी के मंदिर में भी जाकर देवी की पूजा-अर्चना की गई। आस्था के इस मुख्य केंद्र की ख्याति भी दूर-दूर तक फैली हुई है। कामाख्या देवी को तंत्र-मंत्र की देवी माना जाता है। यहां वर्ष में एक बार शानदार मेला भरता है। मेले के दौरान बहुत से साधक यहां आकर साधना करते हैं।

यद्यपि मेरे द्वारा सभी राज्यों के दर्शनीय स्थलों का थोड़ा-बहुत वर्णन करने का प्रयास किया गया है लेकिन इन राज्यों में इनके अलावा भी अन्य असंख्य दर्शनीय स्थल एवं ट्रेकिंग रूट्स है। यदि आप एडवेंचर एवं प्राकृतिक सौंदर्य के शौकीन हैं तो आपको कम से कम एक बार उत्तरी-पूर्वी राज्यों की सैर अवश्य करनी चाहिए।

गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा सीमा शुल्क आयुक्तालय को प्रदत्त राजभाषा पुरस्कार

वर्ष 2017-18 में सीमा शुल्क आयुक्तालय द्वारा हिन्दी में श्रेष्ठ कार्य करने पर नवम्बर, 2018 ने चण्डीगढ में आयोजित राजभाषा सम्मेलन में आयुक्तालय को श्री किरण रीजूजी, माननीय वित्त राज्य मंत्री द्वारा प्रदत्त पुरस्कार प्राप्त करते हुए श्री मंजूर अली अंसारी, अपर आयुक्त एवं श्री अशोक कुमार बिरानियां, कनिष्ठ अनुवादक

केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर, जयपुर जोन में स्वच्छता पखवाड़ा 2019 का आयोजन

जनवरी 2019 में आयोजित स्वच्छता पखवाड़ा के दौरान स्वच्छता की शपथ लेते हुए विभागीय अधिकारी एवं कर्मचारीगण।

विद्या ददाति विनयम् - फल भरे वृक्ष झुकते हैं

सुभाष चन्द्र अग्रवाल, आयुक्त, सीमा शुल्क (निवारक) जोधपुर

''तूफानों में बड़े बड़े मजबूत पेड़ गिर जाते हैं

किन्तु कोमल तरूओं को कुछ नहीं होता क्योंकि वे झुकना जानते हैं।''

हमें विनम्रता का महत्व बचपन से ही सिखाया जाता है। हमारी संस्कृति में बड़ों के आगे झुक कर चरण स्पर्श करना संस्कारों की बात होती है। फिर पदासीन होने पर अपनी विनम्रता क्यों भूल जाते हैं? व्यवसायियों से सीधे मुंह बात न करना जैसे कि हम लोक सेवक न होकर कहीं के राजाधिराज हों, या जमींदार हों, ऐसा क्यों?

मातहतों से ऐसे पेश आना कि वे आपके सामने आने से भी कतराएं। यह तो हमारी संस्कृति का अंग नहीं है। अक्सर ऐसा व्यवहार करते समय हम भूल जाते हैं कि प्रत्येक अधिकारी एक उपभोक्ता भी है और जैसा व्यवहार वह दूसरों के साथ कर रहा है वैसा उसके साथ भी हो सकता है। प्रत्येक पदासीन व्यक्ति किसी न किसी का मातहत भी होता है। किन्तु हम अपने उच्च संस्था अधिकारी से तो अपने प्रति अच्छा व्यवहार की अपेक्षा रखते हैं परन्तु वही व्यवहार अपने से निम्न अधिकारियों से नहीं करते।

विनम्रता कुशल प्रबन्धन का पहला सोपान है। यदि आप अपने निम्न अधिकारियों के प्रति विनम्र रहते हैं, उनकी बात ध्यानपूर्वक सुनते हैं तो वे आपको सही (चाहे वह आपको अच्छा न लगे) सलाह देने का साहस करेंगें। यदि आप उन पर बात-बेबात गुस्सा करेंगें तो वे आपको अपनी तरफ से सही सलाह देने के बजाय आपको क्या अच्छा लगता है यही सोचते रहेंगें व आप अनेक अच्छे इनपुटस् से वंचित रह जाऐंगे। यह मानव मस्तिष्क की सीमा है कि एक व्यक्ति के लिए किसी भी मसले के सम्पूर्ण पहलूओं को देखने में कठिनाई होती है। अत: आप जितना खुले रहेंगे तथा आपके कनिष्ठ अधिकारियों को जितना आपसे वार्ता करने में आसानी होगी उतना ही आप समस्त पहलूओं पर विचार प्राप्त कर सकेंगें व उतना ही आपका निर्णय सही व ज्यादा असरदायक होगा।

इसी तरह व्यवसाय व अन्य वर्ग जब कोई भी समस्या लेकर आपके पास आता है तो उसकी पहली अपेक्षा होती है कि आप उसकी बात सुने। आधी से ज्यादा समस्याएं तो सिर्फ

बात को सुनने से, व्यक्ति को सम्मान देने से ही समाप्त हो जाती है। किंतु अक्सर हम अपने उन्माद में ना हों तो व्यक्ति को ठीक से सम्मान देते हैं, जैसे कि बेमतलब प्रतीक्षा करवाना, ध्यान से उसकी समस्या न सुनना, अनावश्यक मामले को तूल देने जैसा है। आजकल के संचार के युग में किसी के लिए भी उच्च अधिकारियों, मंत्रियों तक अपनी बात पहुंचाना एकदम आसान है। फिर भी हमें इन सब लोगों को लिखित उत्तर देना पड़ता है, इससे अच्छा है कि हम जहां तक हो सके अपने स्तर पर ही समस्याओं का निदान करें। इसमें सार्थक संवाद व विनम्र व्यवहार की महती भूमिका होती है।

अत: हमें अपने कार्यालयीन व वैयक्तिक कार्यकलापों में हमेशा विनम्र व्यवहार का पालन करना चाहिए। लोक सेवक होने के नाते यह हमारी जिम्मेदारी भी है व कर्त्तव्य भी।

❑❑

दुर्योधन अभी जिंदा है

मंजूर अली अंसारी, अपर आयुक्त, सीमा शुल्क (निवारक) आयुक्तालय, जयपुर

दुर्योधन अभी जिंदा है
उसके खल अट्टहास के शोर में
द्रौपदी की कातर पुकार नित्य धूमिल हो रही
बुद्धिजीवी सभा तटस्थ अभी भी है मौन पड़ी
वह सहज व निर्भीक बन प्रतिपल
द्रौपदी की चीर एवं आत्मा का हरण कर रहा
वह वज्र शक्ति का खुला प्रदर्शन कर रहा।

माँ गांधारी आज भी अक्षम है खड़ी
वह अपने दुस्साहसी पंजों के बल से
चार दीवारी के अंदर से लेकर बाहर तक
विभिन्न द्रौपदी का शिकार है कर रहा
पिता धृतराष्ट्र की अंधपट्टी ज्यों की त्यों है पड़ी
द्रुपद सुता के चीर को नित्य निर्लज्ज है खींच रहा।

''कृष्णा'' की हृदय-विदारक चीख को अब कौन सुने
इस युग में केशव के रूप में स्वयं आगे आना होगा
सामुहिक द्रौपदी बन आत्म-बल से लड़ना होगा
प्रत्येक द्रुपद को उसे सशक्त बना खड़ा करना होगा
गांधारी व धृतराष्ट्र को भी अब प्रहारक बनना होगा
तटस्थ सभा को भी अब मौन तोड़ संहारक बनना होगा
जिन्दा दुर्योधन पर अब अंतिम प्रहार करना होगा।

❑❑

गज़ल

जिंदगी हर हाल में जीने का हुनर आता है
खाक़ में मिलकर भी खिलने का हुनर आता है।

मौजे दरिया की अकूत गहराइयों से
कीमती मोती चुनकर निकालने का हुनर आता है।

निस्बते अना के हिफाजत के लिए
तेज शमशीर के किनारे पर चलने का हुनर आता है।

भँवर में फँसी मुहब्बत के सफ़ीने को
साहिल पर सलीके से लाने का हुनर आता है।

सुबह के सुनहरे ख्वाब की तावीर को
हकीकत का खूबसूरत जामा पहनाने का हुनर आता है।

मायूस हर इंसान के लबों पर
खुशी के तराने लाने का हुनर आता है।

जिंदगी के मरहमों के हर तूफान से
''मंजूर'' को पूरे अकादत से टकराने का हुनर आता है।

❑❑

पाखी

ऋतु अग्रवाल, अधीक्षक, केन्द्रीय वस्तु एवं सेवाकर अंकेक्षण आयुक्तालय, जयपुर

''बाबूजी! बाबूजी! मुझे जाने दीजिए, बाबूजी! वे लोग मेरा इंतजार कर रहे होंगे। मुझे जाने दीजिए, बाबूजी!'' पाखी की आवाज पूरे घर में गूंज रही थी। अब वह कुछ रूंआसी भी हो चली थी। परंतु बाबूजी टस से मस नहीं हो रहे थे। उन्होंने जो एक बार कह दिया वह पत्थर की लकीर समझो। परंतु पाखी भी इतनी जल्दी हार मानने वाली नहीं थी। तभी सुनयना मंदिर से लौट आई, पाखी को इस तरह गिड़गिड़ाता देखकर थोड़ा चकरा गई। पाखी से कारण पूछने लगी। पाखी ने कहा, ''मां जी, मैं आपको पूरी बात बता दूंगी, परंतु अभी मुझे जाने दीजिए। अगर मैं आज नहीं गई तो मैं अपने आप को कभी माफ नहीं कर पाऊंगी।'' यह कह कर पाखी सिसकने लगी। सुनयना को माज़रा समझ नहीं आया, उसने गोकुल प्रसाद की तरफ देखा और पूछा – ''क्या हुआ? पाखी इस तरह रो क्यों रही है।'' गोकुल प्रसाद का पारा सातवें आसमान पर था वे बोले, ''होना क्या था! इसका दिमाग फिर गया है, अपने सारे गहने लेकर जा रही थी, वह तो भला हो मैं ऐन वक्त पर आ गया और मुझे देख कर यह ठिठक गई। इतने में रामप्रसाद की जोरू ने इसे आवाज़ लगा दी, मुझे खटका हुआ और मैंने पूछताछ की तो मुझे पता चला। मैंने रोका इस पर यह हो हल्ला कर रही है। यूं ही एक दिन में नहीं बन जाते इतने गहने। सालों से मेहनत कर रहा हूं, तब जाकर आज यह दिन देखने को मिला है। पर इसका बस चले तो हमें सड़क पर सुला दे।''

यूँ तो पाखी की उम्र कुछ खास नहीं थी। अभी तेरह वर्ष की हुई थी, परंतु उस का ब्याह पिछले वर्ष हो गया था और गौना भी हो गया था। ईश्वर ने उसे जैसी सूरत दी थी वैसी ही सीरत भी दी थी। गौरवर्ण पाखी की बड़ी बड़ी निर्विकार आंखें देखने वाले की नजरें नहीं हटने देती थी। सभी कामों में निपुण पाखी ने ससुराल आकर सभी का मन मोह लिया था। सभी उसे जी जान से चाहने लगे थे। सुबह पों फटने से पहले उठकर पाखी सभी काम एक निपुण गृहिणी की तरह करती। बाबूजी के उठने से पहले उनके पीने के लिए तांबे के लोटे में जल भर देती। फिर पूजा की तैयारी कर देती। बाबूजी पूजा करके उठते उससे पहले उनका पाटा और आसन लगाकर खाने का इंतजाम कर देती। बाबूजी तो पाखी को बहू के रूप में पाकर निहाल हो गए थे। उसे एक पल अपनी आंखों से ओझल न होने देते। सबसे कहते पाखी के आ जाने से अनंत के जाने का पता ही नहीं चलता। इस बच्ची ने आकर इतनी रौनक कर दी है।

और तो और जब तक घर की महाराजिन, बरौनी और पुनिया खाना ना खा लेतीं तब तक वह भी खाना नहीं खाती। फिर आज ऐसा कौन सा पहाड़ टूट पड़ा जो बाबूजी उससे इस कदर नाराज़ हो गए। किसी के समझ में नहीं आ रहा था। पाखी रोए जा रही थी और बाबूजी पहेलियां बुझा रहे थे।

सुनयना ने फिर पूछा, ''पहेलियां ही बुझाते रहोगे या कुछ बताओगे भी।'' गोकुल प्रसाद बोले, ''इन महारानी को देखो जमीन से उगी नहीं है और चली है देश को आजाद कराने। जैसे देश को आजाद कराने का जिम्मा इन्हीं का है। यूँ तो पीतांबर दास ने भी कोई कसर नहीं छोड़ी शादी में, ऊपर से नीचे तक सोने से लाद दिया अपनी बेटी को और ना ही मैंने कोई कसर छोड़ी। सोचा था बच्चे खुश रहें तो हमें और क्या चाहिए। परंतु इनके समझ में आए तब ना! इतनी बड़ी मिल्कियत ऐसे ही नहीं खड़ी की। एक-एक पाई जोड़ी है तब जाकर आज समाज में कोई हैसियत बनी है।''

अब सुनयना को सारा माजरा समझ आ रहा था। पिछले कुछ समय से पाखी के रंग-ढंग कुछ अलग से हो गए थे। कीमती गहने व कपड़े छोड़कर मोटा कपड़ा पहनती। साधारण खाना खाती। हमेशा किन्हीं ख्यालों में खोई रहती। तरुणावस्था के विपरीत वह कोई परिपक्व स्त्री नजर आती। जब उसकी उम्र की तरुणियाँ काजल बिंदी खरीदने में व्यस्त रहती, वह अपने कमरे में किसी दूसरी दुनिया में खोई रहती। सुनयना ने कई बार पूछने की कोशिश की परंतु वह टाल गई। उसने भी ज्यादा तूल

नहीं दिया, क्योंकि कुछ माहौल भी ऐसा ही बन रहा था। वह रोज़ ही पूरा दोपहरी बाहर रहती। कभी कहती किसी की शादी की मंगोड़ी बनानी है तो कभी पापड़ बनाने हैं और कभी बन्ना बन्नी गाने हैं।

इन सबके बीच पाखी के अंदर एक क्रांतिकारी जन्म ले रहा था, इसका किसी को लेशमात्र भी भान ना था। गोकुल प्रसाद ने पाखी के घर से बाहर निकलने पर पूर्ण पाबंदी लगा दी। किसी को पाखी से मिलने की इजाज़त नहीं थी। इस घटना के बाद पाखी ने खाना नहीं खाया। वह रात को सो भी नहीं पाई। परंतु सुबह प्रतिदिन की तरह उठ कर सारे दैनिक कार्य नियमानुसार किए। उसका फूल सा चेहरा मुरझा गया था। आंखें भी सूजी हुई थी। उसे देखकर गोकुल प्रसाद का कलेजा मुंह को आ रहा था। उन्होंने सुनयना से पाखी की इच्छा पूछने के लिए कहा, परंतु सुनयना ने बीच में आने से इंकार कर दिया। उसने कहा, ''यह तुम बाप-बेटी के बीच का मामला है, आपस में निपट लो तो बेहतर होगा। मैं कुछ बोलूंगी तो बुरी बनूंगी।''

हारकर गोकुल प्रसाद ने पाखी को बुला भेजा। खवासन पाखी को बुला लाई।

पाखी आई। आकर जमीन पर बिछी हुई चटाई पर बैठने लगी तो गोकुल प्रसाद बोले, ''अब तुम इस घर की बहू थोड़े ही रही हो, अब तो तुम क्रांतिकारी हो गई हो, ऊपर कुर्सी पर बैठो और बताओ क्या चाहती हो?''

गोकुल प्रसाद के बोलने में थोड़ा व्यंग का पुट था। जिसे पाखी भली-भांति समझ रही थी। वह ठिठक गई और बैठने के बजाय खड़ी ही रही। गोकुल प्रसाद के बार-बार कहने पर वह कुर्सी पर बैठ गई। गोकुल प्रसाद ने अपनी बात दोहराई और पूछा कि वह क्या चाहती है । तब पाखी ने कहा, ''बाबूजी, क्या सोने की बेड़ियां वे बेड़ियां नहीं रहती, बेड़ियां सोने की हों या लोहे की कहलाएंगी तो बेड़ियां ही। आज आप की इतनी बड़ी मिल्कियत है, सभी रसूखदारों में आपका उठना बैठना है। गोरे लोगों में भी आपका आना जाना है, परंतु आप भी हैं तो गुलाम ही ना ! इन अंग्रेजों के गुलाम ! जब तक अंग्रेजों का आपसे काम निकल रहा है तब तक यह आपको पूछेंगे उसके बाद दूध में से मक्खी की तरह निकाल फेंकेंगे।''

गोकुल प्रसाद अवाक् पाखी की बात सुन रहे थे पर समझ नहीं पा रहे थे कि क्या यह वही पाखी है जो उनके लिए एक छोटी सी बच्ची से ज्यादा कुछ ना थी। पाखी बोले जा रही थी, ''बाबूजी क्या यह संग्राम सिर्फ किसी एक आदमी का है? क्या यह किसी एक को आजादी मिलने या ना मिलने का प्रश्न है? क्या भारत आजाद होगा तो हम आजाद न होंगे? फिर क्यों इस महायज्ञ में हमारी आहुति ना होगी? आप तो जानते ही हैं बिना आहुति के यज्ञ पूर्ण नहीं होता। जो काम वे लोग कर रहे हैं उसके सामने मुझे मेरा यह दान बहुत तुच्छ प्रतीत होता है। अगर मैं इतना भी ना कर सकी तो मुझे मेरा जीवन व्यर्थ ही मालूम होता है। मैं इस समर में कूद जाना चाहती थी, परंतु डरती थी कि आपसे आज्ञा ना मिल सकेगी। आज जब मुझे आपसे आज्ञा ही लेनी है तो मैं आपसे हाथ जोड़कर आज्ञा मांगती हूँ कि मुझे इस संग्राम में सक्रिय रुप से भाग लेने दें।''

गोकुल प्रसाद के पांव तले जमीन खिसक गई वह कुछ समय निर्जीव बने बैठे रहे फिर कुछ सोचते हुए उठे और कमरे में उद्विग्न से घूमने लगे। वे कुछ समझ नहीं पा रहे थे, ना ही कोई निर्णय ले पा रहे थे। उन्होंने पाखी से कहा कि वे पीतांबर दास से विचार विमर्श कर ही इस मामले में निर्णय लेंगे क्योंकि उनका अकेले का निर्णय लेना वैसे भी युक्तिसंगत ना था। फिर पाखी का पति अनंत भी विलायत मैं अपनी पढ़ाई करने गया हुआ था। ऐसे में उनका अकेले निर्णय कर पाना असंभव था। उन्होंने पीतांबर दास को बुला भेजा। संदेश मिलते ही पीतांबर दास पहुंच गए। उनकी उचित आवभगत करने के बाद गोकुल प्रसाद उन्हें बैठक में ले गए। वहां पर पाखी एवं सुनयना भी मौजूद थे। पीतांबर दास को घर की महिलाओं की मौजूदगी कुछ अटपटी लगी, पर वे चुप रहे। गोकुल प्रसाद ने सारा वृत्तांत कह सुनाया। सुनकर पीतांबर दास भी हतप्रभ रह गए। घंटो विचार विमर्श के बाद यह निर्णय लिया गया कि पाखी अपने गहने संग्राम के लिए दे सकती है, उससे ज्यादा कुछ नहीं। परंतु अब तक पाखी कुछ और ही निर्णय ले चुकी थी उसने सक्रिय भागीदारी के लिए आज्ञा देने को कहा जिसे सुनकर सभी गंभीर हो गए। आज तक दोनों खानदानों में ऐसी कोई स्त्री ना हुई थी जिसने सामने से कुछ बोला हो और आज पाखी ने बोला भी तो ऐसा कि हर कोई सुनकर हैरान था और परेशान भी। विशेष रूप से पीतांबर दास बहुत दुविधा में थे। क्योंकि वह जानते थे कि पाखी ने अगर कुछ सोच लिया है तो वह अडिग अटल है। गोकुल प्रसाद ने पीतांबर

दास की ओर देखा। पीतांबर दास बहुत ही असहाय दिख रहे थे। पीतांबर दास ने भी गोकुल प्रसाद को सजल नेत्रों से देखा और कहा, ''भाई साहब, अब पाखी का मोह छोड़ दीजिए। अगर उसने एक बार कह दिया तो वह टल नहीं सकता। मैंने उसे गोद में खिलाया है इसीलिए कह रहा हूं।''

गोकुल प्रसाद को तो जैसे सांप सूंघ गया। कुछ समय वह यथावत बैठे रहे फिर उठे और पाखी के सामने जाकर बैठ गए हाथ जोड़कर बोले, ''बिटिया, तुम्हारे सिवा हमारा और है ही कौन? हम तुम्हें नहीं जाने दे सकते। हमें माफ कर दो, पर हमें छोड़कर मत जाना।'' पर पाखी के मन में तो इन्कलाब जिंदाबाद के नारे गूंज रहे थे। उसने कहा, ''बाबूजी एक पाखी चली जाएगी तो कोई फर्क नहीं पड़ेगा। अभी बहुत सी पाखियाँ जन्मेंगी।'' देश की आजादी के सामने मेरा जीवन मुझे तुच्छ प्रतीत होता है। पाखी की बातें सुनकर घर वालों ने घुटने टेक दिए और उसे उसकी इच्छा अनुसार करने की इजाज़त मिल गई। अब पाखी दूने उत्साह के साथ काम में जुट गई। सुबह शाम घर के काम यथावत करती रही, परंतु दोपहर एवं रात में संग्राम के सभी कार्यों में वह सक्रिय रूप से भाग लेने लगी।

फिर एक दिन पाखी गोकुल प्रसाद के सामने जा खड़ी हुई। उसके इस प्रकार सामने आ जाने से गोकुल प्रसाद का मन आशंकित हो उठा। पाखी ने कहा, ''बाबूजी, कल सुबह हमने सदर थाने पर तिरंगा झंडा फहराने का निर्णय लिया है, अत: कल सुबह के कार्य मैं नहीं कर पाऊंगी, मैंने महाराजिन को सब समझा दिया है। वह आपके सभी कार्य समय से यथानुसार कर देगी। आपको कोई कष्ट ना होगा।'' गोकुल प्रसाद ने पूछा, ''क्या वहां तुम्हारा जाना आवश्यक है?'' पाखी ने बताया सदर थाने पर झंडा वही फहराने वाली है। गोकुल प्रसाद को मानो काटो तो खून नहीं। उनका मुंह खुला का खुला रह गया। जाने किस आशंका में उनके आंखों से अश्रुधारा बह निकली। पर पाखी के सधे हुए शब्दों में दृढ़ निश्चय था और उससे कुछ भी कहना व्यर्थ था।

पूरी रात गोकुल प्रसाद अपने कमरे में चक्कर लगा रहे थे। नींद उनसे कोसों दूर थी। पाखी सुबह की तैयारी में लगी हुई थी। सुबह नियत समय पर पाखी नहा धोकर तैयार हुई। फिर पूजा पाठ से निवृत्त होकर घर से निकल गई। गोकुल प्रसाद भी पीछे पीछे निकल गए। जब सदर थाने पहुंचे तो देखा क्रांतिकारियों के जत्थे के जत्थे थाने की ओर चले आ रहे थे। एक जत्था महिलाओं का भी था। जिसमें सबसे आगे पाखी चली आ रही थी। उसके हाथ में तिरंगा झंडा था। एक बार के लिए गोकुल प्रसाद को उसे देख गर्व की अनुभूति हुई परंतु फिर वह कुछ सोचते हुए वहाँ से निकले और उन अंग्रेज अफसरों के यहां पहुंचे जिन्हें वह नियमित रूप से डाली पहुंचाते रहे थे। उन्हें बताया कि पाखी उनकी बहू है और बहुत अनुनय-विनय किया कि कुछ भी हो अंग्रेज सरकार की तरफ से गोलियाँ ना चलाई जाए। परंतु उन्हें वहां से दो टूक जवाब मिला, ''गोकुल प्रसाद, क्या तुम बच्चा है? इतना भी नहीं जानता कि हम सरकार के लिए काम करता है, तुम्हारे लिए नहीं। सरकार चलाने के लिए हमें जो भी करना पड़ेगा हम करेगा। तुम अपना बहू को बोलो वह वहां से चला जाए।'' गोकुल प्रसाद अपना सा मुंह लिए उल्टे पाँव सदर थाने लौट आए। वहां जो दृश्य देखा देखकर गोकुल प्रसाद के मुंह से इंकलाब जिंदाबाद के नारे निकलने लगे। पाखी थाने पर चढ़ चुकी थी, उसके हाथ में तिरंगा था और वह उसे यथास्थान लगा रही थी। तभी एक गोली उसकी छाती को चीरती हुई निकल गई और वह इन्कलाब जिंदाबाद कहती हुई थाने के ऊपर से नीचे गिर गई। उसके हाथ का तिरंगा उसके शरीर से लिपट गया था। गोलियों की अंधाधुंध बौछार से सभी लोग तितर-बितर हो गए। गोकुल प्रसाद पाखी की तरफ दौड़े परंतु लोगों ने उन्हें ऐसा ना करने दिया और पीछे धकेल कर दूर ले गए। कुछ समय बाद सब शांत हो गया था। सभी शहीद क्रांतिकारियों के परिवार वाले शहीदों के निर्जीव शरीर को ले जाने लगे थे। पाखी का पार्थिव शरीर भी घर लाया गया उसके शरीर से तिरंगा अभी भी लिपटा हुआ था। सभी संस्कार यथावत किए गए परंतु उसके शरीर से तिरंगा अलग ना किया गया। जब उसकी शव यात्रा निकली तो उसमें जितने लोग शामिल थे उतने गोकुल प्रसाद ने किसी शव यात्रा में न देखे थे। यात्रा के दौरान राम नाम सत्य है की जगह इन्कलाब जिंदाबाद की नारे लगाए जा रहे थे। जब पाखी का शरीर चिता पर रखा गया तो सभी की आंखें भीग आईं। महिलाएं चित्कार उठीं। पंडित जी ने पीतांबर दास से पूछा, ''पाखी को मुखाग्नि कौन देगा?'' उन्होंने गोकुल प्रसाद की तरफ इशारा किया। गोकुल प्रसाद पाखी को मुखाग्नि दे रहे थे और मन ही मन कुछ निर्णय भी ले रहे थे। ❑❑

मां की दुनिया

विवेक श्रीवास्तव, अधीक्षक,
केन्द्रीय वस्तु एवं सेवाकर अपील
आयुक्तालय, जयपुर

माँ की दुनिया है बहुत बड़ी
बाकी सब की छोटी-छोटी

समाहित हैं उसमें सब
बाबूजी, बहुएं, बेटियाँ, दामाद,
पोते, पोतियाँ
दोहिते, दोहतियाँ,
उनके बच्चे, उनके परिवार,
उनके ससुराल, उनके पीहर,
नौकर-चाकर, आस पड़ोस और उनके रिश्तेदार

नहीं बनाती है कोई बजट
पर नहीं करती बिल्कुल भी किन्यायत
देखती है सबको
रखती है ख्याल सबका
जानती है जरूरत और स्वभाव, हर बहू का
और करती है प्रयास परिवार में
संतुलन बैठाने का

उसकी जरूरतें है सीमित
पर
रहती है परेशान
सोच कर इंतजाम औरों का

कोई आ जाता है कभी घर का
या रिश्तेदार दूर का

तो
होती है उसे चिंता उनके सोने की

बीमार हो अगर कोई तो सोचती है
लगी होगी नजर किसकी

कितना बड़ा दिल रखती है माँ
नहीं हिचकती मँगाने में
कोई मँहगा फल या मिठाई
अगर की हो किसी ने भी थोड़ी भी फरमाइश

रहती है तत्पर करने को खर्च आगे से आगे
है उसका हाथ खुला भी, बरकती भी
बार-बार सोचता हूँ, क्या जरूरत है माँ को
इतना सब करने की
हो जाती है बीमार सोच-सोच कर
बारे में दूसरों की!

फिर देखता हूँ तो पाता हूँ
माँ के अलावा नहीं है कोई ऐसा 'सर्वसमावेशी'

पड़ी रहती है चिंता सब को
अपने-अपने हित की

लगाते हैं सब हिसाब
किसने लगाया है घर में पैसा कितना
घर माँ के नाम होने पर भी

जो है अब मालकिन बस नाम मात्र की
और नहीं जताती वो कभी हक भी

कर रखा है सीमित उसने एक कोने में,
हो जाती है उदास सुन कर वो कटु भाषा बच्चों की

रहती है चिंता उसे सदा कमजोर बच्चे की
लिख देना चाहती है वसीयत कि बनी रहे शांति
और न हो कोई झंझट, उसके जाने के बाद भी

सोचता हूँ कि क्या हो सकता है
कोई माँ जितना
उदार, न्याप्रिय और दरियादिल

तो

नहीं पाता हूँ काबिल मैं खुद को भी

❑❑

लघु कहानियां

रवि मलिक, सहायक निदेशक, प्रवर्तन निदेशालय, जयपुर

स्वाभिमान :

चौराहे पर लाल बत्ती पर गाड़ी रोकते ही अनायास ही नजर फुटपाथ पर खड़े एक सभ्य से दिखने वाले व्यक्ति पर चली गयी। ऐसा लग रहा था कि जैसे वो कुछ करना चाह रहा हो पर कोई चीज उसे ऐसा करने से रोक रही हो। उसके चेहरे पर एक व्याकुलता थी। जैसे ही मेरी नजर उससे मिली वो कुछ झिझकता हुआ मेरी गाड़ी के पास आ गया। मुझे लगा शायद वो कुछ मांगना चाहता है पर मांग नहीं पा रहा है, इसलिए मैंने पर्स निकालने के लिए जेब में हाथ ही डाला था कि वो एक दम से बोला – ''नहीं सर, पैसे नहीं चाहिए, अगर किसी भी तरह की कोई नौकरी मिल जाए बस।''

यह सुनकर मेरे मुंह से एक दम से निकला बहुत बढ़िया, स्वाभिमानी हो, पर मैं तुम्हें कोई नौकरी नहीं दे सकता।

इतने में हरी बत्ती होते ही ट्रैफिक चालू हो गया और मैंने भी अपनी गाड़ी आगे बढ़ा ली। अगले दिन फिर वहीं से निकलना हुआ और संयोग से लाल बत्ती होने पर चौराहे पर रुकना भी पडा। मेरी आँखें चौराहे पर चारों तरफ उस स्वाभिमानी आदमी को तलाश रही थीं पर वो नहीं दिखा। हाँ, चौराहे पर आज एक व्यक्ति बंदर की ड्रेस पहन कर उछल कूद करके लोगों से पैसे माँगता हुआ जरूर दिखा।

तभी वो बंदर रूपी आदमी उछलकर मेरे सामने आ गया और उसने अपना हाथ फैलाया। उसके हाथ पर एक रुपये का सिक्का रखते हुए मेरी आँखें फिर से इधर-उधर उस आदमी को तलाश करने लगीं।

तभी वो बंदर की ड्रेस पहने व्यक्ति एकदम से बोला – ''सर, स्वाभिमान मर गया, यह भूख भी बड़ी कुत्ती चीज होती है।''

इससे पहले की मैं कुछ बोल पाता मुझे उलझन में छोड़ वो उछलता हुआ आगे निकल गया।

इंसान की मौत :

रामदयाल जी एक नामी हॉस्पिटल में ICU के बाहर चिंतामग्न बैठे थे। रात उनकी पत्नी सुशीला को अचानक सीने में दर्द होने पर वो उसे हॉस्पिटल में लाए थे। डॉक्टर्स ने दिल का दौरा पड़ना बता कर तुरंत बाईपास की आवश्यकता बताई थी। ऑपरेशन करने के बाद सुशीला को ICU में भेज दिया गया था। बाहर रामदयाल जी बारम्बार भगवान् को याद करके सुशीला के स्वस्थ होने की दुआएं मांग रहे थे। मरीज से मिलने की

इजाज़त होने पर वो तुरंत ICU के बाहर पहुंचे और दरवाजे में लगे शीशे में से झाँकने पर उन्होंने देखा कि सुशीला आँखें बंद कर निश्चल सी पलंग पर लेटी हुई है, उसके मुहं पर ऑक्सीजन का मास्क लगा हुआ था। रामदयाल जी एकटक सुशीला को देखते रहे पर उसके शरीर में उन्हें किसी प्रकार की हलचल महसूस नहीं हुई। उनका मन आशंकाओं से भर गया पर उन्होंने अपने विचारों को झटकते हुए भगवान को याद करना शुरू कर दिया। मिलने का समय खत्म होने पर वो बाहर आ गए।

अगले दिन भी यही क्रम सुबह और शाम दोहराया गया। तीसरे दिन रामदयाल जी ने कुछ सोचते हुए अपने मित्र के रिश्तेदार अनिल जी, जो कि पेशे से डॉक्टर थे को आग्रह करके सुशीला को एक बार देखने के लिए बुलाया। अनिल जी डॉक्टर होने के नाते ICU में अंदर चले गए और

उन्होंने वहां सुशीला को चेक किया। बाहर आकर उन्होंने रामदयाल जी से बात की तो रामदयाल जी का शक सच्चाई में बदल गया, क्योंकि सुशीला का तो स्वर्गवास हो चुका था पर वो इस बात को नहीं समझ पाए की हॉस्पिटल वाले क्यूँ उनसे इस बात को छिपा रहे हैं। उन्होंने सर को झटका देते हुए कुछ इन्तजार करना यह सोचकर मुनासिब समझा कि शायद सुशीला का स्वर्गवास अभी-अभी हुआ हो और हॉस्पिटल वाले थोड़ी देर में ही उन्हें इस बारे में बता देंगे पर शाम तक भी उन्हें यही जवाब मिलता रहा कि इलाज चल रहा है, ठीक हो जायेंगी।

शाम होते-होते वो समझ गए कि सुशीला के मरने से कहीं पहले ही इन्सान मर चुका है और आज के इस भौतिक युग में मृत देह को ज़िंदा बता कर रखने से बहुत लोगों की इच्छाएं ज़िंदा रह पा रही थीं। अब उनका धैर्य समाप्त हो चुका था और उन्होंने कांपते हाथों से 100 नंबर डायल करना शुरू किया।

बहू की कसक :

राहुल की अनुपस्थिति में उसकी माँ को अचानक हृदयाघात हुआ। राहुल की पत्नी रश्मि एक क्षण के लिए तो घबरा गयी कि राहुल की अनुपस्थिति में कैसे सब कुछ होगा पर उसने हिम्मत न हारते हुए तुरंत हॉस्पिटल में एम्बुलेन्स के लिए फ़ोन किया। हॉस्पिटल में पहुँच कर उसने तुरंत अपनी सास को इमरजेन्सी में भर्ती कराया। हॉस्पिटल में फार्म भरते वक्त मरीज से रिश्ते वाली जगह पर रश्मि ने मां लिखा। अगले दिन राहुल के आने तक डॉक्टर उसकी माँ का तुरंत ऑपरेशन कर चुके थे और वो खतरे से बाहर थीं।

राहुल अपनी माँ के होश में आते ही उससे मिलने आईसीयू में गया। रश्मि भी उसके साथ थी। तभी डॉक्टर रश्मि की तरफ देखता हुए राहुल की माँ से बोला यह तो आपकी बेटी की समझदारी और फुर्ती ही थी कि आप आज सकुशल है।

राहुल की माँ ने रश्मि की तरफ देखते हुए धीरे से कहा - ''डॉक्टर साहब, यह मेरी बेटी नहीं बहू है।''

रश्मि की बहू से बेटी बनने की कसक अभी भी अधूरी ही थी।

वृद्धाश्रम :

इमारत के बाहर खड़े रामदयाल जी पुरानी यादों में खोये हुए थे। उन्हें याद आ रहा था कि किस तरह वो राहुल को अंगुली पकड़ कर स्कूल छोड़ने जाया करते थे और जैसे ही स्कूल की छुट्टी की घंटी बजती थी, वो राहुल को लेने के लिए स्कूल के बाहर खड़े होते थे। सर्दी, गर्मी और बरसात कुछ भी रामदयाल जी को राहुल को स्कूल छोड़ने और फिर वापस लेने में आड़े नहीं आती थी। सालों तक यह क्रम जारी रहा जब तक कि राहुल दूसरे शहर में पढ़ने नहीं चला गया।

आज राहुल उनको अंगुली पकड़कर इस इमारत में सुबह छोड़कर गया था और छोड़ते वक्त बोला था कि पिताजी यह आपकी उम्र के लोगों का स्कूल है, आपको यहाँ मजा आएगा।

सुबह से शाम हो गयी थी पर राहुल वापस नहीं आया था। वो चिंताओं में डूबे हुए थे, तभी उनके कंधे पर किसी ने बड़े प्यार से हाथ रखा। रामदयाल जी ने घूम के देखा तो उनके तथाकथित स्कूल के दिन भर के साथी उनको घेरकर खड़े थे। उनमें से एक बोला रामदयाल जी अंदर आ जाइए, राहुल आपको लेने नहीं आयेगा क्योंकि इस स्कूल में रोज-रोज छुट्टी की घंटी नहीं बजती है।

रामदयाल जी ने भरे मन से सामने सड़क की ओर देखा और घूम कर अपने साथियों के साथ अंदर चल दिए। जाते-जाते उनकी निगाह उस इमारत के ऊपर लिखे शब्दों पर पड़ी जहाँ पर लिखा था; गोल्डन ऐज वृद्धाश्रम।

❑❑

मोक्ष

शालिनी वर्मा, अधीक्षक, कार्यालय मुख्य आयुक्त, केंद्रीय वस्तु एवं सेवाकर, जयपुर

टहलते हुए, यूँ ही कभी देखा – पेड़ों की टहनियों से गिरे कुछ फूल
महसूस किया – क्या टहनी को बुरा लगा होगा ?

या फिर फूल ने गिरने से पहले कैसे अलविदा कहा होगा ?
वो मुरझाया सा अपनी उम्र पूरी करने का दिलासा लिए हुए मन में
आ गिरा पड़ा होगा धूल में !

या फिर गिरने से पहले टहनी ने कहीं उलाहना तो नहीं दे दिया होगा
कि अब न वो शोख रंग हैं न ही लुभावनी खुशबु
तो फिर दिल टूट गया होगा फूल का !
छोड़ दिया होगा जुड़ाव टहनी से

उस जननी मिट्टी ने लिया होगा बाँहों में सहर्ष
सुकून तो पाया होगा उस फूल ने अपना वजूद खोकर भी।
न कोई उलाहना, न डर टूटने का, न गम बिखरने का
तासीर मिट्टी की लेकर मोक्ष प्राप्ति की तृप्ति हुई तो होगी!

क्या मिलता जुलता जीवन चक्र नहीं हम इंसानों का ?
फिर मृत्यु नामक सच्चाई से भय कैसा ?
छोड़कर अपना वजूद ही मिलेगी शांति, चिरनिद्रा और मोक्ष.....

❑❑

उजियारा

दीपक पंजाबी, अधीक्षक, कार्यालय मुख्य आयुक्त, केंद्रीय वस्तु एवं सेवाकर, जयपुर

अब कहाँ चल दिए... मैं तमक गया।

वो पापा...सूसू आई है.....तुम सहम गए।

अभी 2 मिनट बाद पॉटी भी आएगी, फिर तुम्हारे पेन की इंक खत्म होगी और फिर और कुछ....एक घंटा भी टिक कर तुम पढाई नहीं कर सकते.....मेरी त्योरियां चढ़ी हुई थी।

तुम्हारे मुँह से एक शब्द नहीं निकला, बस हाथ लटकाये सर झुकाये खड़े रहे।

अब खड़े क्या हो, जाओ और एक मिनट में वापस ना आये तो देखना।

आज सुबह जब से तुम्हारी PTM अटेंड करके आया हूँ तब से तुम मुझे दुश्मन से लगने लगे हो। रास्ते भर भी मैंने तुम्हे बगल वाली सीट पर बैठा कर जी भर कर कोसा....तुम्हे रत्ती भर भी शर्म नहीं आती, तुम्हारी टीचर कंप्लेंट करती है, तुम्हारी कोऑर्डिनेटर कंप्लेंट करती है, तुम छठी क्लास में एक translucent की स्पेलिंग तक सही नहीं लिख सकते। सबकी शिकायते सुन कर मुझे शर्म आ जाती है लेकिन तुम वही बेशर्म के बेशर्म बने रहते हो, कोई फर्क नहीं पड़ता, माधव को देखो, EVS में तुमसे डबल मार्क्स हैं, अगर स्कूल जाना अच्छा नहीं लगता तो छोड़ दो, क्यों मेरे पैसे बिगाड़ रहे हो.....हाँ ये ही अच्छा है, मैं तुम्हारे स्कूल से तुम्हारा नाम ही कटवा देता हूँ।

तुम सारी बातें सर झुकाये चुपचाप सुन रहे थे लेकिन आखिरी बात पर गिड़गिड़ा उठे....नहीं पापा, मुझे स्कूल से मत निकालो, मैं अब बहुत पढाई करूँगा, प्रॉमिस, आपको कभी कंप्लेंट सुनने को नहीं मिलेगी।

लेकिन तुम्हारी डबडबाती आँखों में मुझे नाटक के सिवाय कुछ नहीं दिखा...अच्छा हो आगे से कंप्लेंट ना ही आये नहीं तो तुम जानते हो की अब मैं क्या करूँगा...और हाँ, सुनो, आज से तुम्हारा शाम को फुटबॉल खेलना बंद।

तुम कुछ ना बोले, शायद साहस नहीं था और झिड़कियां सुनने का...घर आया और गाड़ी से उतर कर तुम भारी कदमों से अपने कमरे में जाकर पलंग पर सर नीचे करके गिर गए।

दिन भर मुझे तुम्हारी फैली हुई किताबें, स्टडी टेबल की दराजें, चॉकलेट का रैपर, बेपरवाह रखे जूते, ऑन छोड़ा पंखा और ना जाने क्या क्या दिखता रहा और मुझे जैसे लाइसेंस मिला हो, हर बात पर तुम्हे पूरी ऊर्जा से झिड़कता रहा।

शाम को जब मैं गाड़ी से उतरा तो तुम घर के बाहर अपने दोस्तों के साथ खेलते खेलते मुझसे लिपट गए....मैंने तुम्हे धकेलते हुए पूछा....स्कूल का और ट्यूशन टीचर का होमवर्क हो गया।

तुम चहक कर बोले....हाँ पापा, मैंने सब कर लिया।

मेरा वार मानो खाली गया.....तो अब रात होने वाली है, बहुत हो गया खेलना, अंदर चलो।

मगर तुम्हारे होठों में कोई बात दबी थी, नज़रें चुराए मुझे विनती भरी आँखों से देखते रहे।

मैं फिर से तुनका...अब क्या है?

तुम अपनी मीठी सी आवाज को और जितना मीठा बना सकते थे, बनाया.....पापा प्लीज मुझे टवेंटी रुपीज दे दो, मुझे एक कार्ड बोर्ड लाना है।

मुझे मानो ये ही बहाना चाहिए था और मैं बरस पड़ा .....अब तुम न मुझसे पिटोगे, आज ही तुम्हारी कंप्लेंट आई है और इस हफ्ते में तुम मुझसे तीन बार पहले ही कार्डबोर्ड लाने को पैसे ले चुके हो, कर क्या रहे हो, खाते हो क्या कार्डबोर्ड को।

तुमने अपनी आखिरी कोशिश की...पापा अब नहीं मांगूंगा, बस लास्ट टाइम।

बस अब बहुत हो चुका था.....मैंने तुम्हारा हाथ जोर से खींचा और सर पर एक चपत देकर बोला....चलो अंदर और खाना खाकर बैठो स्टडी टेबल पे।

तुम्हारे सारे दोस्तों को तुमने भरी आँखों से देखा और अपने कमरे की तरफ चल दिए।

मैं थोड़ी देर बाद टीवी पर क्रिकेट मैच देखने में मशगूल हो गया और जब मुझे ध्यान आया तो तुम्हारी मम्मी ने बताया की तुम बिना खाना खाये तभी सो गए।

मुझे इस बात पर भी गुस्सा आया की अब इनको खाना भी मनुहार करके खिलाओ और मैं तुम्हारे कमरे में आया....और लाइट ऑन करके बिना तुम्हारी ओर देखे चारों तरफ नज़र दौड़ाई।

सब जगह कुछ न कुछ बिखरा था.....पता नहीं कब बड़ा होगा, छठी क्लास में आ गया लेकिन अक्ल उतनी की उतनी, सब चीजें खरीदने का शौक है, बस फिर फेंक दो.....मैं भिनभिनाते हुए गिरी हुई चीजें उनकी जगह पर रख रहा था जब तक की कमरे के कोने में एक तिरछी रखी प्लाई का टुकड़ा नहीं दिखा...जैसे किसी ने जानबूझकर कुछ छिपाया हुआ हो। मैंने अनमने ढंग से हटाया तो पीछे कार्डबोर्ड से बना एक पूरा एरोप्लेन मिला। आगे लाइट और प्रोपेलर लगा, बीच में मोटर लगी, पीछे फिन बना हुआ और दोनों तरफ फैले पंख....नहीं, एक तरफ का पंख अधूरा था। नीचे की तरफ तारों के जंजाल के बीच लगे बटन को दबाते ही पूरा एयरोप्लेन हरकत में आ गया, हर पुर्जा काम कर रहा था। मैं चकित था।

मैंने तुम्हारी बहन को आवाज दी....चिकी, ये हनु किसका एयरोप्लेन ले आया।

पापा...ये किसी से लाया नहीं, ये तो उसने खुद बनाया, रात को आप लोग जब सो जाते हो और मैं पढ़ती हूँ तो घंटा घंटा इसमें लगा रहता है, कहता है पापा ने कहा के तुझे पायलट बनाऊंगा तो मैं भी उनको उड़ने वाला एयरोप्लेन बना के सरप्राइज दूंगा।

मुझे धक्का सा लगा...मैं चिकी को जाने को कह के वही कुर्सी पे पसर गया। सुबह से अब तक का सारा दिन मेरी आँखों के सामने घूम रहा था। मैंने कितनी बार तुम्हारे आत्मसम्मान का मर्दन किया, कितनी बार तुम्हारे मन को ठेस पहुंचाई....और तुम्हारे दोस्तों के सामने भी मैंने तुम्हे डांटा-मारा। क्या सोचते होगे तुम मेरे बारे में...कि ये पापा हैं या जल्लाद।

सोचते सोचते मैं तुम्हारे पास आया....तुम दोनों हाथो को अपने गाल के नीचे रख के सो रहे थे....सुर्ख गाल पर आंसू सूखने के काले निशान बने थे। मैंने तुम्हारे सर पर जैसे ही हाथ रखा, तुम्हारे गले में रुंधी हुई सुबकी निकली और तुम और गहरी में नींद सो गए।

मैं भी तुम्हारे सिरहाने ही सर रख के सो गया, शायद अपराध बोध से। सुबह हुई, मेरी आंख तुम्हारे दोस्तों की आवाज से खुली जो खेलने के लिए तुम्हें बुला रहे थे....तुम अभी तक सोये थे....मैं बैठ कर तुम्हारे उठने का इंतज़ार करने लगा....अचानक तुम्हें चेत हुआ, और तुम उठ बैठे.....आंखे मूंदे मूंदे ही छोटे से हाथ ऊपर उठा कर अंगड़ाई ली....जैसे ही आंखे खुली और मुझे देखा.....चहक उठे...पापा, आप रात को मेरे पास सोये।

तुम चादर फेंक कर उठे और पीछे से आकर मेरे गले में बाहें डालकर झूल गए।

मैं तुम्हारे गाल से अपना गाल सटाए, नम आँखों से सोच रहा था की इतने छोटे से जिस्म में इतना बड़ा दिल कहाँ रखते हो।

❑❑

जो सबसे ज्यादा बोली जाती है

हम सबको एक बनाती है

वो है हिन्दी भाषा

भारत की शान

हम सबका अरमान

लम्हों की दास्तान

शिवानी माहेश्वरी, सहायक निदेशक (लागत)
केंद्रीय वस्तु एवं सेवाकर अंकेक्षण आयुक्तालय, जयपुर

आइए करते हैं बात कुछ बीते हुए लम्हों की

हर पल में सुकून भर देने वाले लम्हों की

कुछ बदल पाने की हिम्मत दिलाने वाले लम्हों की

मुश्किलों में राह दिखा देने वाले लम्हों की

बेहतर से बेहतरीन बना देने वाले लम्हों की

करते हैं बात कुछ बीते लम्हों की

याद दिलाकर रुला देने वाले लम्हों की

और रोते – रोते हंसा देने वाले लम्हों की

अनाडी से खिलाडी बना देने वाले लम्हों की

दूसरों को खुश देखकर

अपना दर्द भुला देने वाले लम्हों की

बच्चे से बडा बना देने वाले लम्हों की

और फिर.....

एक नई दास्तान बना देने वाले लम्हों की।

❑❑

छोटी सी प्रतिज्ञा

संजय शर्मा, अधीक्षक (सतर्कता)
केन्द्रीय वस्तु एवं सेवाकर अंकेक्षण आयुक्तालय, जयपुर

'May I come in, Sir' के स्थान पर 'क्या मैं अन्दर आ सकता हूँ श्रीमान' इतना अटपटा या विचित्र नहीं है परंतु इसको मन में अंगीकार कर स्वेच्छा से अपनाना और दिन-प्रतिदिन उपयोग में लाना वर्तमान पीढ़ी को कठिन कार्य लगता है। अंग्रेजी भाषा से अधिक अंग्रेजों की मानसिकता से आजादी हमारी प्राथमिकता होनी चाहिये। हमें अन्तर्मन से यह स्वीकार करने की आवश्यकता है कि हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग हमारी प्रगति में किसी भी प्रकार की बाधा नहीं है ना ही सार्वजनिक रूप से हिंदी का प्रयोग करने से हम सामाजिक अथवा वैचारिक स्तर पर निम्नतर साबित होंगे। हमें इस बात का भली प्रकार से ज्ञान और भान होना चाहिये कि हिंदी ना केवल सामान्य जन की भाषा है वरन् इसमें विचारों को सुदृढ़ और स्पष्ट रूप से अभिव्यक्त करने की असीम क्षमता है। हिन्दी में ना केवल आम वार्तालाप की क्षमता निहित है अपितु इसमें गूढ़ से गूढ़ भावनाओं एवं विचारों को सहज रूप से प्रकट करने लायक शब्दावली, व्याकरण एवं कलेवर भी समाहित है। अंग्रेजी भाषा का सार्वजनिक रूप से निर्बाध उच्चारण और प्रयोग कर हम भले ही स्वयं को अतिशिक्षित और प्रबुद्ध साबित करने में लीन हैं परंतु सत्य यह है कि हिंदी का कम होता हुआ प्रयोग हमें अपनी सम्पन्न विरासत से दूर ले जा रहा है। आवश्यकता इस बात है कि समय रहते हम सजग हो और इस बात के लिये गंभीर रूप से प्रयत्नशील हो कि हमें स्वयं को एवं अपनी आने वाली पीढ़ी को हिंदी के ज्यादा से ज्यादा प्रयोग के लिये प्रोत्साहित करना है। आइये, हम स्वयं यह प्रतिज्ञा करें कि हम आज से ही हिंदी भाषा का लेखन और वार्तालाप में अधिक से अधिक प्रयोग करेंगे।

❑❑

जीएसटी दिवस समारोह – 2019

दिनांक 1 जुलाई, 2019 को आयोजित जीएसटी दिवस का मुख्य समारोह

श्री हनुमान सहाय एवं साथी कलाकार
CELEBRATING
GST
CELEBRATING
GST

1. Amer Fort, Jaipur
तरूणा डांस ग्रुप की प्रस्तुति
CELEBRATING
GST
CELEBRATING
GST

NATION
TAX
MARKET
CELEBRATING
GST

प्यासा ग्रुप की प्रस्तुति

जीएसटी दिवस समारोह – 2019

जीएसटी दिवस के उपलक्ष्य में दिनांक 3 जुलाई, 2019 को आयोजित स्वास्थ्य जांच एवं रक्तदान शिविर

जीएसटी दिवस समारोह - 2019

दिनांक 4 जुलाई, 2019 को ट्रेड के साथ आयोजित जीएसटी संबंधी सेमिनार

दिनांक 5 जुलाई, 2019 को आयोजित वृक्षारोपण कार्यक्रम

जीएसटी दिवस समारोह – 2019

जीएसटी दिवस समारोह – 2019

दिनांक 6 जुलाई, 2019 को आयोजित जीएसटी रन

दिनांक 13-14 नवम्बर, 2018 को विश्व सीमा शुल्क संगठन द्वारा जयपुर में आयोजित कार्यक्रम

अन्तर्राष्ट्रीय सीमा शुल्क दिवस 2019

डॉ. पूनम मीना, उपायुक्त, सीमा शुल्क (निवारक) आयुक्तालय, जोधपुर

सीमा शुल्क सहकारिता परिषद के प्रथम अधिकारिक सम्मेलन के स्मरण के उपलक्ष्य में सीमा शुल्क संगठन द्वारा प्रतिवर्ष 26 जनवरी को अन्तर्राष्ट्रीय सीमा शुल्क दिवस का आयोजन किया जाता है। वर्तमान में 26 जनवरी, 1953 से विश्व सीमा शुल्क संगठन द्वारा इसका आयोजन किया जा रहा है। विश्व सीमा शुल्क संगठन समस्त विश्व के सीमा शुल्क प्रशासन में कुशलता एवं दक्षता बढ़ाने के लिए एक अंतर-सरकारी निकाय है। 26 जनवरी को गणतंत्र दिवस होने के कारण केंद्रीय अप्रत्यक्ष कर एवं सीमा शुल्क बोर्ड द्वारा इसका आयोजन 25 जनवरी करने का निर्णय लिया गया है।

इस वर्ष अन्तर्राष्ट्रीय सीमा शुल्क दिवस की थीम "SMART borders for seamless Trade, Travel and Transport" के स्लोगन के साथ "the swift and smooth cross-border movement of goods, people and means of transport" पर समर्पित थी। यह थीम विभिन्न सरकारी एजेंसियों के साथ इंटरफेस को कम करके माल की त्वरित निकासी की अवधारणा को प्रतिपादित करती है।

कार्यालय आयुक्त, सीमा शुल्क (निवारक) जोधपुर, मुख्यालय-जयपुर द्वारा दिनांक 25 जनवरी, 2019 को राजस्थान पुलिस अकादमी, जयपुर के परिसर में स्थित ऑडिटोरियम में इसका धूमधाम से किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि के रूप में श्री एस.के. भटनागर, सेवानिवृत्त आईआरएस तथा विशिष्ट अतिथि श्री सतीश कुमार गुप्ता, महानिदेशक (अन्वेषण), आयकर विभाग, जयपुर समारोह की शोभा बने।

अन्य विभागों के वरिष्ठ अधिकारियों के अलावा विभिन्न आयुक्तलयों के आयुक्तगण, सेवानिवृत्त अधिकारीगण, उद्योग एवं व्यापार जगत के प्रतिनिधि तथा विभाग के अधिकारियों एवं कर्मचारीगणों ने उपस्थित होकर कार्यक्रम को सुशोभित किया।

पारंपरिक तौर पर दीप प्रज्ज्वलन के साथ कार्यक्रम का शुभारम्भ किया गया। इसके बाद श्री सुभाष चन्द्र अग्रवाल, आयुक्त सीमा शुल्क ने अपने स्वागत भाषण में बताया कि भारत सरकार की पहल पर केन्द्रीय अप्रत्यक्ष कर एवं सीमा शुल्क बोर्ड द्वारा समस्त विश्व में निर्बाध व्यापार सुनिश्चित करने के लिए कई योजनाएं आरम्भ की गई है। सीमा शुल्क आयुक्तालय में भी इन योजनाओं को प्रभावी तरीके से कार्यान्वित करने हेतु प्रतिबद्ध है।

विभाग की उपलब्धियों के बारे में बताया गया कि अन्तर्राष्ट्रीय विमान पत्तन, जयपुर तथा भू-सीमा शुल्क स्टेशन मुनाबाव में सुगम निकासी के लिए संबंधित एंजेंसियों से बेहतर समन्वय स्थापित करते हुए कार्य किया जा रहा है। अन्तर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे पर चालू वित्त वर्ष में 11, 316 हज तीर्थ यात्रियों के अलावा 3096 उड़ानों में लगभग 4.50 लाख अंतर्राष्ट्रीय यात्रियों को क्लीयरेंस दी गई।

वर्तमान वित्तीय वर्ष में आईजीएसटी रिफंड एवं ड्राबैक दावों की मंजूरी के लिए चलाए गए विशेष अभियान के परिणाम स्वरूप रिफंड के रूप में रु. 321.85 करोड़ तथा ड्रा बैक के रूप में रु.78 करोड़ स्वीकृत किए गये है। आयुक्त महोदय ने आगे बताया कि विगत वर्ष की इसी अवधि के राजस्व संग्रहण रु. 825 करोड़ की तुलना में चालू वित्त वर्ष में दिसम्बर, 2018 तक दोगुना राजस्व संग्रहण अर्थात् रु. 1753.90 करोड़ संग्रहित किया गया है। इसी अवधि के दौरान सोने की तस्करी के 30 मामलों में राशि रु. 5.61 करोड़ के सोने (लगभग 20 किलोग्राम) का भी पता चला है।

इस कार्यक्रम में विभाग से संबंधित एक लघु उत्कृष्ट फिल्म 'उम्मीद से आगे' का

प्रदर्शन किया गया जिसमें राजस्थान में सीमा शुल्क के गौरवशाली इतिहास को दर्शाया गया था। जिसकी सभी ने सराहना की गई। इस फिल्म के बाद विभाग की उपलब्धियों से संबंधित एक पावर पाइंट प्रजन्टेशन प्रस्तुत किया गया।

इस अवसर पर एक रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम का भी आयोजन किया गया । इस सांस्कृतिक कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण नासिन, क्षेत्रीय प्रशिक्षण संस्थान, जयपुर के प्रशिक्षु निरीक्षकों द्वारा प्रस्तुत किया गया सामूहिक गीत कार्यक्रम था।

कार्यक्रम के अगले चरण में वर्ष 2018 के दौरान कार्यालय में उत्कृष्ट कार्य निष्पादन करने वाले अधिकारियों को मुख्य अतिथि द्वारा प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। इसके अलावा राजस्व के क्षेत्र में AEO-Certificate उद्योग एवं व्यापार जगत के निर्धारितियों को प्रदान किए गए।

कार्यक्रम की मधुर स्मृतियों को चिर स्थायी बनाये रखने के लिए मुख्य अतिथि महोदय तथा विशिष्ट अतिथि महोदय सहित कार्यक्रम में पधारे हुए सेवानिवृत्त अधिकारियों को स्मृति-चिह्न भेंट किए गए।

श्री मजूंर अली अंसारी, अपर आयुक्त द्वारा कार्यक्रम के मुख्य अतिथि तथा अन्य अतिथिगण का कार्यक्रम हेतु समय निकालने हेतु धन्यवाद दिया था। कार्यक्रम के सफल बनाने हेतु गठित समितियों की प्रशंसा की तथा अंत में सभी को जलपान हेतु आमंत्रित किया गया।

❑❑

अदर्स डे पे 'मदर्स' को समर्पित

मनोज कुमार मनवानी, अधीक्षक (निपटान), कार्यालय आयुक्त, सीमा शुल्क (निवारक), जोधपुर

'मां' ने उंगली पकड़ी तो
जीने की राह मिली
'मां' की उंगली पकड़ी तो
जन्नत की बारगाह मिली।

'मां' ने दामन थामा तो
बचपन की सौगात मिली
'मां' का आंचल पकड़ा तो
खुशियों की बारात मिली।

'मां' ने जेब टटोली तो
ख्वाबों के बाजार मिले
'मां' की जेब टटोली तो
दुआओं के अल्फाज मिले।

'मां' ने हाथ रखें तो
कामयाबी के साल मिले
'मां' के हाथ चखे तो
स्वादों के पकवान मिले ।

'मां' ने कदम थामे तो
मंजिलों के राह मिले
'मां' के चरण जो पकड़े तो
रब के दरबार मिले।

❑❑

माईनस जीरो

उसके हिस्से की नींद
जब हम सो लेते हैं
सरहद पर हमारे हिस्से का
वो
जाग लेता है।

उसके हिस्से की गर्माहट
रजाई से जब हम ले लेते हैं
हमारे हिस्से का बरफ का दुशाला
वो
ओढ़ लेता है।

अपने साए से भी जब
हम डर जाते हैं
अंधेरों में भी हमारे दुश्मन से
वो
लड़ जाता है।

छप्पन भोग लगाकर भी
जब भूखे हम रह जाते हैं
दुश्मन की गोली खाकर
हमारे हिस्से की
वो
भूख मिटा लेता है।

दहशतगर्दो के अधिकारों की बातें कर
जब हम हीरो बन जाते हैं
हमारे हिस्से के पत्थर खाकर
वो
'माइनस जीरो' बन जाता है।

❑❑

वेलेंटाइन

मुसीबतें मुंह
बाए थी जब खड़ी
ढाल बने तुम
ही आगे थी अड़ी
कदम जब दो
रखना भी था दूभर
तेरा सहारा ही रहा राहत बड़ी

जमीं पे मरहम लगाने को
फरिश्तों में थी जब होड़ बड़ी
खुदा ने तुम्हे बख्श के
की इनायत बड़ी।

ना तुमने कोई गीत कहा मेरे लिए
ना तुम्हारे लिए मैंने कोई कविता गढ़ी
जिंदगी की किताब फिर भी
हमने साथ ही पढ़ी।

तोहफा कोई मोहब्बत का
ना दिखावे में भी दिया तुमको
बस लगाता हूं बाग में
तुम्हारे ही लिए
मैं
फूलों की लड़ी
और आसमां से बरसात की झड़ी।

चमकते चांद का नूर
या जन्नत की हूर
ख्वाहिशें जब बेहिसाब हुई
तेरी बाहों में सिमटकर ही
आरजू सब निहाल हुई।

❑❑

रोग मुक्त रहने के लिए टहलिए

अरूण भटनागर, अधीक्षक, कार्यालय आयुक्त, सीमा शुल्क (निवारक), जोधपुर

तेजी से चलना (टहलना) एक लाभकारी व्यायाम है। सुबह की सैर ना सिर्फ आपको तरोताजा रखती है बल्कि बहुत सारी बीमारियों से लड़ने की शक्ति भी देती है। रक्तचाप सामान्य रहे, उसके लिए कम से कम तीन किलोमीटर की दूरी तक टहलना आवश्यक है। आज के युग में अधिकतर लोगों को उच्च रक्तचाप की शिकायत है जिसका मुख्य कारण हमारी दिनचर्या, असंतुलित खानपान व शारीरिक व्यायाम (टहलना) की कमी है। लकवा, दिल का दौरा, धड़कन बढ़ना आदि उच्च रक्तचाप के प्रतिफल है। यह बात निश्चित है कि टहलने से स्वास्थ्य सुधरता है।

यह एक सर्वज्ञात तथ्य है कि रक्त-परिभ्रमण (Blood Circulation) यदि ठीक हो तो दिल का दौरा तथा इस प्रकार के अन्य रोग से आदमी बचा रहता है। तेजी से चलने पर हृदय को अपेक्षाकृत अधिक रक्त शरीर के लिए पम्प करना पड़ता है। प्रातःकाल तेजी से टहलने से शरीर अधिक समर्थ रूप में ऑक्सीजन उपभोग करता है तथा कम परिश्रम में ही फेफड़े वायु को अधिक दक्षतापूर्वक परिशुद्ध करते हैं। टहलने से शरीर में ऑक्सीजन संतुलन सही बना रहता है। नियमित टहलने से आदमी बिना किसी तनाव के अपने स्वास्थ्य को अधिक उन्नत बना सकता है।

नियमित रूप से टहलने से वजन भी नियंत्रित रहता है। सर्वोत्तम कसरत चलना है। हमारे पूर्वज घोड़ा, गाड़ी आदि का उपयोग नहीं करते थे एवं अधिकतर पैदल चल कर ही अपने कार्य करते थे जो उनके स्वास्थ्य को दुरूस्त रखता था। आज हमारे लिए गाड़ी का उपयोग आवश्यक हो गया है जिससे पैदल चलना ना के बराबर होता जा रहा है। इन हालात में नियमित रूप से प्रातःकाल टहलना परम आवश्यक है। टहलने से व्यक्ति को अतिरिक्त कैलोरी भस्म करने का मौका मिलता है व रक्त की चरबी की मात्रा कम होती है। स्वस्थ रहने के लिए टहलने के साथ ही पूर्ण पोषक आहार भी आवश्यक है। हमारे भोजन व शक्ति व्यय में संतुलन परम आवश्यक है एवं टहलना इस संतुलन को बनाये रखने में मदद करता है।

सुबह सैर करने के मुख्य फायदे निम्न प्रकार है :

1. हाई ब्लड प्रेशर को कंट्रोल करता है और बढ़े हुए कोलेस्ट्रोल को भी कम करता है।
2. शरीर की हड्डियां मजबूत होती हैं।
3. वजन कम करने में सहायक है।
4. दिमागी टेंशन एवं तनाव से छुटकारा मिलता है। आप तरोजाता महसूस करते हैं।
5. शरीर में शुगर कंट्रोल रहता है।
6. आप स्फूर्तिदायक महसूस करेंगे व थकान कम महसूस होगी।

प्रारंभ में प्रतिदिन प्रातः 10 मिनट टहलने से शुरू कर धीरे-धीरे समय बढ़ाया जाना चाहिये। टहलने में ध्यान देने की बात है कि खाली पेट तेजी से टहला जाये। नियमित रूप से प्रतिदिन एक निश्चित समय पर शुद्ध वातावरण में टहलना चाहिये।

'रोग का कारण
अनियमित जीवन,
जागरूक हों और लाएं संतुलन'

❑❑

मेरी जीवनसंगिनी

विशाल सोलंकी, निरीक्षक, कर अपवंचना, केन्द्रीय वस्तु एवं सेवाकर आयुक्तालय, जोधपुर

नीली आभा बन चारों और तुम छाई हो
जैसे नील गगन को तुम इस धरा पर लाई हो।
कितना कुछ मिला है मुझको
जब से तुम जीवन में आई हो।

जो जीवन था सूखा सरोवर
विशाल जलनिधि लाई हो
मेरी सांसे मेरी खुशियाँ
मेरी किस्मत को भी तुम भायी हो
जब से तुम जीवन में आई हो।

जब भी रोकता हूँ तुझे
टोकता हूँ तुझे
डाँटता हूँ तुझे
झकझोरता हूँ तुझे
तुम नहीं जानती
प्यार करने से रोकता हूँ खुद मुझे
वरना तो एक साया बन के
तुम जीवन पर छाई हो
इस सूखे तरूवर पर
तुम हरियाली ले आई हो।
जब से तुम जीवन में आई हो।

कहीं मैं तुम ना बन जाऊँ
खुद में से न छिन जाऊँ
मुझमें से मुझको छीनो तुम
और मैं काठ-सा तन जाऊँ।
बस इसी बात से डरता हूँ मैं
बाकि तो तुम पर मरता हूँ मैं
सूने जीवन ने फिर से खुशियों की रुत पाई है।
जब से तुम जीवन में आई हो।

जंगल देखे, दरिया देखे,
पत्थर देखे, पंछी देखे,
रंग देखे, रंगीनी देखी
तुझमें जीवन संगिनी देखी।
मुझे हर जन्नत छुड़ा के लाई हो
जीवन को जन्नत बनाया
ऐसी बहार बनी और सुमिरन आई हो।
मेरी शोहरत मेरी दौलत मेरी पाई-पाई हो।
जब से तुम जीवन में आई हो।

❑❑

मुफ़्त की रोटियां

अरुण कुमार मिश्रा, निरीक्षक, केंद्रीय वस्तु एवं सेवाकर संभाग–एफ, जयपुर

एक गृहिणी वो रोज़ाना की तरह आज फिर ईश्वर का नाम लेकर उठी थी। किचन में आई और चूल्हे पर चाय के लिए पानी चढ़ाया। फिर बच्चों को नींद से जगाया ताकि वे स्कूल के लिए तैयार हो सकें। कुछ ही पलों मे वो अपने सास–ससुर को चाय देकर आयी और फिर बच्चों का नाश्ता तैयार किया और इसी बीच उसने बच्चों को ड्रेस भी पहनाई। फिर बच्चों को नाश्ता कराया। पति के लिए दोपहर का टिफिन बनाना भी जरूरी था।

इस बीच स्कूल का रिक्शा आ गया और वो बच्चों को रिक्शा तक छोड़ने चली गई । वापिस आकर पति का टिफिन बनाया और फिर मेज़ से जूठे बर्तन इकठ्ठा किये ।इस बीच पतिदेव की आवाज़ आई की मेरे कपडे.निकाल दो । उनको ऑफिस जाने लिए कपड़े निकाल कर दिए।

अभी पति के लिए उनकी पसंद का नाश्ता तैयार करके टेबिल पर लगाया ही था कि छोटी ननद आई और ये कहकर गई कि भाभी आज मुझे भी कॉलेज जल्दी जाना है इसीलिए मेरा भी नाश्ता लगा देना।

तभी देवर की भी आवाज़ आई कि भाभी नाश्ता तैयार हो गया क्या?

अभी लीजिये नाश्ता तैयार है। पति और देवर ने नाश्ता किया और अखबार पढ़कर अपने–अपने ऑफिस के लिए निकल चले।

उसने मेज़ से खाली बर्तन समेटे और सास ससुर के लिए उनका परहेज़ का नाश्ता तैयार करने लगी। दोनों को नाश्ता कराने के बाद फिर बर्तन इकट्ठे किये और उनको भी किचिन में लाकर धोने लगी।

इस बीच सफाई वाली भी आ गयी। उसने बर्तन का काम सफाई वाली को सौंप कर खुद बेड की चादरें वगैरह इकट्ठा करने पहुँच गयी और फिर सफाई वाली के साथ मिलकर सफाई में जुट गयी।

अब तक 11 बज चुके थे। अभी वो पूरी तरह काम समेट भी ना पायी थी की, कालबेल बजी ।

दरवाज़ा खोला तो सामने बड़ी ननद, उसके पति व बच्चे खड़े थे ।

उसने खुशी–खुशी सभी को आदर के साथ घर में बुलाया और उनसे बाते करते करते उनके आने से हुई खुशी का इज़हार करती रही ।

ननद की फ़रमाईश के मुताबिक़ नाश्ता तैयार करने के बाद अभी वो ननद के पास बैठी ही थी कि सास की आवाज़ आई की बहू खाने का क्या प्रोग्राम हे ।

उसने घड़ी पर नज़र डाली तो बारह बज रहे थे ।

उसकी फ़िक्र बढ़ गयी सो वो जल्दी से फ्रिज की तरफ लपकी। सब्ज़ी निकाली और फिर से दोपहर के खाने की तैयारी में जुट गयी ।

खाना बनाते–बनाते अब दोपहर का दो बज चुके थे। बच्चे स्कूल से आने वाले थे।

लो, बच्चे आ गये। उसने जल्दी–जल्दी बच्चों की ड्रेस उतारी और उनके हाथ–मुँह धुलवाकर उनको खाना खिलाया।

इस बीच छोटी ननद भी कॉलेज से आ गयी और देवर भी आ चुके थे ।

उसने सभी के लिए मेज़ पर खाना लगाया और खुद रोटी बनाने में लग गयी।

खाना खाकर सब लोग फ्री हुये तो उसने मेज़ से फिर बर्तन जमा करने शुरू कर दिये।

इस वक़्त तीन बज रहे थे। अब उसको खुद को भी भूख का एहसास होने लगा था।

उसने हॉट पॉट देखा तो उसमे कोई रोटी नहीं बची थी ।

उसने फिर से किचिन की ओर रुख किया। तभी पतिदेव घर में दाखिल होते हुये बोले की आज देर हो गयी। भूख बहुत लगी है जल्दी से खाना लगा दो ।

उसने जल्दी–जल्दी पति के लिए खाना बनाया और मेज़ पर खाना लगा कर पति को किचन से गर्म रोटी बनाकर ला कर देने लगी।

अब तक चार बज चुके थे।

अभी वो खाना खिला ही रही थी कि पतिदेव ने कहा, ''आ जाओ, तुम भी खा लो ।''

उसने हैरत से पति की तरफ देखा, तो उसे ख्याल आया कि आज मैंने सुबह से कुछ खाया ही नहीं ।

इस ख्याल के आते ही वो पति के साथ खाना खाने बैठ गयी ।

अभी पहला निवाला उसने मुंह में डाला ही था कि आँख से आंसू निकल आये।

पतिदेव ने उसके आंसू देखे तो फ़ौरन पूछा की तुम क्यों रो रही हो।

वो खामोश रही और सोचने लगी की, इन्हें कैसे बताऊँ कि ससुराल में कितनी मेहनत के बाद ये रोटी का निवाला नसीब होता है और लोग इसे मुफ़्त की रोटी कहते हैं।

पति के बार-बार पूछने पर उसने सिर्फ इतना कहा कि कुछ नहीं बस ऐसे ही आंसू आ गये ।

पति मुस्कुराये और बोले कि तुम औरतें भी बड़ी बेवक़ूफ़ होती हो बिना वजह रोना शुरू कर देती हो।

क्या आपको भी लगता है की गृहिणी मुफ़्त की रोटियां तोड़ती है।

सभी गृहिणियों/महिलाओं को सादर समर्पित।

❑❑

फ़र्क सोच का

शालिनी वर्मा, अधीक्षक,
कार्यालय मुख्य आयुक्त, केंद्रीय वस्तु एवं सेवाकर, जयपुर

ट्रेन अपनी गति से चल रही थी, पर सीट पर बैठा नवयुवक बैचैन हो कर बड़बड़ा रहा था - ''पता नहीं, कितनी धीरे चल रही है ये ट्रेन ! क्या होगा इस देश का? समय की तो कीमत ही नही है कहीं !''

उसके सामने की सीट पर बैठे धीर-गंभीर प्रोफेसर यादव पुस्तक को पढ़ते हुए भी नौजवान के हाव-भाव से नावाकिफ़ नहीं थे।

नौजवान फिर बड़बड़ाया, ''कैसी निम्न दर्जे की सीटे दे रखी है रेलवे ने, टिकट इतनी महँगी, फिर भी सुविधाएँ निम्न दर्जे की, और कितना गंदा है यह कोच ! पता नहीं, कुछ कभी सुधरेगा या नहीं !''

प्रोफेसर यादव ने मुस्कुरा कर नवयुवक से पूछ ही लिया, ''बेटा, ऐसा तो नहीं है कि सब कुछ बुरा ही है, अब तो रेलवे की सुविधाएँ काफ़ी बेहतर हैं।'' नौजवान को तो जैसे शिकायत की पोटली खोलने का मौका ही मिल गया, उसने कार्यालयों में फैली अराजकता से लेकर ट्रैफिक समस्याओं तक की व्यथा प्रोफेसर के सामने ऐसे जताई जैसे पूरी दुनिया गलतियों का पुतला हो और ये साहबजादे उन गलतियों की दुहाई देकर इस समाज को चेताने का बड़ा पवित्र काम कर रहें हों।

प्रोफेसर ने इत्मिनान से सब सुना, फिर बोले, ''बेटा, तुम और मैं इस देश की एक इकाई हैं, हम जैसों से मिलकर ही तो बना है देश। देखो, तुमने अपनी सीट के नीचे कैसे प्लास्टिक की बोतल फेंक दी है? बेटा, 'देश हमें क्या दे रहा है' यह कहने से पहले हमे देखना होगा कि हम देश को क्या दे रहे हैं। हम स्वयं को बदले तो यह व्यवस्था, सिस्टम सब स्वत: सुधरेगा। फिर हम बदल भी तो स्वयं को ही सकते हैं, दूसरों पर दोष मढ़ने की बजाए खुद में कुछ अच्छा करने का जज़्बा ही हर तरह के सुधार की शुरुआत होगी।

देश को तुम जैसे नौजवानों से उम्मीद है कुछ कर गुजरने की, न कि समस्याओं से हताश होने की, यह देश तुमसे है और तुम इस देश से।''

नवयुवक कुछ देर तक नि:शब्द बैठा रहा फिर धीरे से उठा और अपने द्वारा फेकी गयी पानी की खाली बोतल उठाकर कचरेदान में डालने चला गया। उसकी झुंझलाहट और बेचैनी की जगह अब ग्लानि और आत्मसुधार की सोच ने ले ली थी।

❑❑

कर्ण का दुर्भाग्य

ऋतु अग्रवाल, अधीक्षक, केन्द्रीय वस्तु एवं सेवाकर अंकेक्षण आयुक्तालय, जयपुर

अगर नियति नहीं कलुषित कपाल काल का करती
कोन्तैय कर्ण का भाग्य पार्थ सा लिखती।

फिर कुंती भी कहां कर्ण को मंजूषा में रखती
क्यों निजपुत्र को गंगा में प्रवाहित करती
क्यों कोंतैय से राधेय कर्ण भी बनता।

पर कुंती भी क्या करती बेचारी अबला नारी
हर युग में ही सहती आई वह ही विपदा भारी।

नहीं रवि का दोष कभी भी पढ़ा गया
पर कुंती पर रोष सभी का मढ़ा गया।

नहीं कुंती की व्यथा पर कुछ भी लिखा गया
पर रवि का महिमा मंडन हर युग में ही किया गया।

ऐ कुंती जो तुम ना त्याग कर्ण का करतीं
महाप्रतापी पुत्र कर्ण सा पातीं
और कर्ण भी कौन्तैय बन गोद तुम्हारी पाता।

पर हाय री विधि
तुझको ना हुआ संतोष उसे मां विहीन करके भी
उसके भाग्य में लिखी घृणा तूने मसि भर-भर के ही।

तीक्ष्ण बुद्धि था फिर भी उसको गुरु ना कोई मिल पाया
जहां गया वहां सूतपुत्र कह उसको डांट भगाया।

दुर्योधन को भी क्या-क्या ना कहा गया
पर कर्ण का दुख उससे भी ना सहा गया
गुदड़ी का लाल सुयोधन पहचान गया
सूतपुत्र से उसने निश्छल प्रेम किया
अपना अंग राज्य निष्काम दिया।

दुर्योधन तो पापी था उसने चीर हरण का पाप किया
उसका विध्वंस तो निश्चित था
पर कर्ण तो दानी और प्रतापी था
हे! हरि
तुमने उसको पग-पग पर क्यूं श्राप दिया
फिर क्यों उसका जीवन अभिशप्त किया
कर अन्याय कर्ण से क्षुधा कौन सी तृप्त हुई।

बालक अभिमन्यु से भी तुम कहां न्याय कर पाए
उसको भी रणभूमि में तुम ही खींच कर लाए
चक्रव्यूह का तोड़ सिखाया पर बाहर निकाल न पाए
और निहत्थे बालक पर गदा से प्रहार करवाए
अन्याय घोर देखकर क्या तुम तनिक नहीं अकुलाए।

दुर्योधन को तो पापी सदा ही कहा गया
फिर विध्वंसक तुम को क्यों ना कहा गया।

क्यों रोक सके ना महायुद्ध तुम
क्यों रोक सके ना महाप्रलय तुम
क्यों केशव बनकर भी विवश रहे तुम
ऐसी रही विवशता कौन बताओ तुम।

भाई भाई में युद्ध करा हे केशव तुमने क्या पाया
कुंडल कवच विहीन कर्ण को भी कहां पार्थ हर पाया
फिर तुमने ही धंसा दिया धरती में कर्ण रथ का पाया
और तुम्हारी लीला से जब पार्थ ने शस्त्र विहीन कर्ण को पाया
वह नहीं शस्त्र विहीन कर्ण पर कोई प्रहार कर पाया
तब तुमने ही पार्थ को राजनीति का घूंट पिलाया
और पार्थ के तरकश से फिर वह तीर चल वाया
जिससे कर्ण इस लोक से छूटा और स्वर्ग को धाया।

पर मन में मेरे आक्रोश व्याप्त यह रहता
सूर्यपुत्र जो छला गया न हरि के हाथों होता
कुरुक्षेत्र की रणभूमि में शोणित पार्थ का बहता।

❑❑

प्राकृतिक चिकित्सा एवं स्वास्थ्य

डॉ. एस.के. शर्मा (एन.डी.डी.वाई.), अधीक्षक (सेवानिवृत्त)

चिकित्सा की विभिन्न विधाओं में आजकल एलोपैथी की तरफ रूझान सबसे ज्यादा है क्योंकि यह विधि तुरन्त आराम देने तथा सर्जरी के मामलों में अग्रणी है। लेकिन यह अत्यधिक खर्चीली है तथा इससे शरीर पर दूसरे दुष्प्रभाव भी होते हैं। दूसरी चिकित्सा विधाओं जैसे आयुर्वेद, यूनानी, होम्योपैथी के भी अपने गुण-दोष हैं।

प्राकृतिक चिकित्सा पद्धति एक ऐसी विधा है जो बीमारी होने के बाद से ज्यादा इस बात पर ध्यान देती है कि शरीर में बीमारी उत्पन्न ही न हो यानि स्वस्थ व्यक्ति भी अगर प्राकृतिक चिकित्सा की शरण में जायेगा तथा पृथ्वी (मिट्टी), जल, वायु, अग्नि और आकाश के द्वारा समय-समय पर उचित तरीके से इनका उपयोग करता रहेगा तो एलोपैथी चिकित्सा के जंजाल में फंसकर समय एवं धन की बर्बादी नहीं करेगा।

स्थानाभाव को देखते हुए इन सभी प्राकृतिक चिकित्सा तत्वों द्वारा की जाने वाली चिकित्सा विधियों का विस्तृत में वर्णन नहीं करके संक्षेप में इनका जिक्र किया जा रहा है। इनमें अधिकांश बातें स्वानुभूत तथा स्व-प्रयोग पर आधारित हैं।

सर्वप्रथम हम बात करते हैं स्नान की। हमसे अगर पूछा जाए कि क्या हम स्नान करते हैं तो सभी का जवाब होगा, ''हाँ''। लेकिन जो स्नान हम नित्य करते हैं वह स्नान तो काया के बाहरी हिस्से का स्नान है। इसके अतिरिक्त भी हमारे शरीर के अन्दर कितने महत्वपूर्ण अंग है - जैसे श्वांस नली, फेंफड़े, हृदय, आमाशय, लिवर, छोटी आंत, बड़ी आंत, गुर्दे आदि। बाहरी स्नान हम इसलिए करते हैं ताकि देखने में हम गंदे दिखाई नहीं दें। लेकिन उपरोक्त आंतरिक अंगों का स्नान भी हमारे ऊपरी स्नान से ज्यादा आवश्यक है।

इन अंगों की सफाई और विजातीय द्रव्य (टोक्सिन्स) बाहर निकालने के लिए प्राकृतिक चिकित्सा में उपवास का बड़ा महत्त्व है। उपवास में शरीर के सभी अंग खाना पचाने वाली शक्ति का उपयोग विजातीय द्रव्यों को बाहर निकाल फेंकने में करते हैं।

उपवास में दिन में तीन-चार बार नींबू और शहद गुनगुने पानी में लेना चाहिए। अन्य फल, दूध या ठोस आहार नहीं लेना चाहिए। उपवास सीधे शुरू न करके पहले फलाहार, रसाहार से शुरू करना चाहिए। उपवास के पश्चात भी रसाहार, फलाहार से इसे समाप्त करना चाहिए। जो व्यक्ति पूर्ण उपवास नहीं कर सकते, वह सप्ताह में एक दिन फलाहार, रसाहार पर रहकर ही उपवास करें। बच्चों, बहुत वृद्ध, डायबिटीज वाले व्यक्ति,

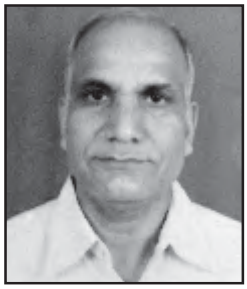

गर्भवती स्त्री, गंभीर बीमारी वाले व्यक्ति को उपवास नहीं करना चाहिए। उपवास के समय पानी अधिक से अधिक पीना चाहिए ताकि विजातीय द्रव्यों को बाहर निकालने में मदद मिल सके।

शरीर के अन्दर के अंगों की सफाई में छोटी आंत एवं बड़ी आंत की सफाई का भी बड़ा महत्त्व है। जिस दिन रसाहार या फलाहार करें उस दिन रात को एक कप दूध में एक-दो चम्मच केस्टर ऑयल लिया जा सकता है। बहुत ज्यादा कब्ज रहने पर माह में एक बार एनिमा लेकर भी बड़ी आंत की सफाई की जा सकती है। छोटी आंत की सफाई के लिए शंख प्रक्षालन क्रिया करना आवश्यक है जो कि योग्य प्राकृतिक या आयुर्वेद चिकित्सक की देखरेख में करनी चाहिए। यह क्रिया साल में एक बार कर लेनी चाहिए।

आजकल के व्यस्त जीवन में हम सूर्य की धूप में बैठने को तो लगभग भूल ही चुके हैं जिससे शरीर में विटामिन-

''डी'' की कमी हो जाती है। इसके अभाव में शरीर में कैल्शियम का उपयोग नहीं होता है। पिछली अवधि में मैंने मेरे परिवार एवं सम्पर्क वाले काफी सदस्यों की विटामिन-''डी'' जांच करवाई, जिनका विटामिन डी 4 एम.जी. से 22 एम.जी. के बीच पाया गया। विटामिन 'डी' का उचित स्तर 30 एम.जी. से 100 एम.जी. तक होना चाहिए। विटामिन 'डी' की कमी से हल्की-सी चोट लगने पर भी हमारी हड्डी टूट सकती है। अतः सप्ताह में अवकाश के दिन 25-30 मिनट का सूर्य स्नान अवश्य लें जिससे विटामिन-''डी'' की पूर्ति हो सके।

जल-चिकित्सा में हम कटि-स्नान, रीढ़-स्नान तथा टब-स्नान गर्म या ठण्डा आवश्यकता अनुसार ले सकते हैं। इसके द्वारा हमारे शरीर में इकट्ठे हुए टॉक्सिन्स को बाहर निकालने में मदद मिलती है। जल अधिक पीकर भी हम टॉक्सिन्स को बाहर निकाल सकते हैं लेकिन फ्रीज का जल कभी नहीं पीना चाहिए। गर्मियों में सुराही या मटकों का जल उत्तम रहता है तथा सर्दियों एवं वर्षा में गुनगुना पानी पीकर हम कई बीमारियों से बचाव कर सकते हैं।

वायु चिकित्सा में हम अधिक से अधिक शुद्ध प्राणवायु को हमें ग्रहण करना चाहिए। हमें गहरी श्वास अन्दर लेना तथा पूर्ण श्वास बाहर निकालने की आदत का अभ्यास करना चाहिए। प्रातः तेज चाल, धीमी गति से दौड़, अनुलोम-विलोम, कपालभाति एवं भस्त्रिका का अभ्यास करने से सही श्वास प्रक्रिया अपने आप शुरू हो जायेगी।

जितना हम प्रकृति से नजदीकियां रखेंगे उतना ही हमारा तन एवं मन स्वस्थ रहेगा। जिन्दगी की भागदौड़ एवं आपाधापी में कुछ समय निकालकर एकान्त में प्रकृति का आनन्द लें अन्यथा सभी भौतिक सुख-साधन एक उम्र के बाद व्यर्थ से नजर आयेंगे। प्राकृतिक साधनों के द्वारा अपने मन-तन को स्वस्थ रखेंगे तो बढ़ती उम्र में भी युवाओं जैसी स्फूर्ति महसूस करेंगे।

❑❑

कुछ अलग है

विशाल सोलंकी
निरीक्षक, कर अपवंचना
केन्द्रीय वस्तु एवं सेवाकर आयुक्तालय, जोधपुर

यूं तो बेवफाई से दिल टूटते हैं हजारों
पर किस्मत से इस बात का तय होना अलग है।
यूँ तो शबिस्तां में सोते हैं हजारों
पर काँटों की किसी सेज पे सोना अलग है।।

यूँ तो मौत पे रोते हैं हजारों
पर एक दोस्त और माँ का रोना अलग है।
यूँ तो दुःखों में साथ देते हैं हजारों
पर आश्वासन से आंसुओं का धोना अलग है।।

यूँ तो जिन्दगी में कमियां खलती हैं हजारों
पर पाकर किसी चीज को खोना अलग है।
यूँ तो जिन्दगी में आंसू गिरते हैं हजारों
पर खोकर किसी के प्यार को रोना अलग है।।

यूँ तो दाग हमने भी ढोये हैं हजारों
पर दिल पर लगे जख्म को ढोना अलग है।
यूँ तो दिल में रहते हैं हजारों
पर आज भी मेरे प्यार का कोना अलग हैं।।

❑❑

मैं कलम की धार हूँ

मंजूर अली अंसारी, अपर आयुक्त, सीमा शुल्क (निवारक) आयुक्तालय, जयपुर

मैं कलम की धार हूँ
मेरी लड़ाई उन सब से है
जो मानवता पर वार करते है।
समाज को बाँटने का जो,
घिनौना काम करते है।
प्रेम बंधुत्त्व को सदैव जो,
विषैले विचारों से शर्मसार करते हैं।
जड़त्व की धुरी में बँधकर जो
प्रगतिशील मनन को बेधार करते है।

मेरी लड़ाई उन सब से है
जो पूर्वाग्रह में पड़कर
तर्कविहीन बातों से तकरार करते है।
खोखले, निर्जीव भाषणों से जो
सुंदर स्थापित व्यवस्थाओं को मुर्दार करते है।
दया, क्षमा के सत्व गुणों को जो
दुर्बल, दंतविहीन समझ बहिष्कार करते है।
हठधर्मिता, अंधत्व में बंद हो सदैव जो
ग्राह्यशीलता से इंकार करते है।

मेरी लड़ाई उन से भी है
जो धन के आवेग में
वंचित वर्गों का तिरस्कार करते है
शोषण के हथकण्डों से जो
मानव अधिकारों का खुले आम शिकार करते है
अकूत बल प्रयोगों से जो
पिछड़े समूहों का बारम्बार तिरस्कार करते है।
लालच, स्वार्थ में जकड़कर जो
समानता के मूल्यों का धिक्कार करते है।

मेरी लड़ाई उन सब से है
जो दोहरे मापदण्डों को अपनाकर
शिक्षा के उद्देश्यों को तार-तार करते है।
निर्जल्लता से बच्चों के अधिकारों का जो
माफिया बन निर्दयता से संहार करते है।
अंधविश्वासों में उलझकर जो
कन्या भ्रूण हत्या का भागीदार बनते है
कर्म बल पर विश्वास न कर जो
मात्र भाग्यफल का परिष्कार करते है।

मेरी लड़ाई उन सब से है
जो झूठे दंभ में पड़कर
नारी की अदम्य शक्ति को नहीं अंगीकार करते है।
पुरातन पंथी सिद्धान्तों का जो
बिन चिन्तन के अक्षरश: स्वीकार करते है।

मेरी लड़ाई निरन्तर जारी रहेगी
उन सब से जो
समरसता, एकता पर वार करते है
स्वहित में मानवता, सामाजिकता पर जो
किंचित घृणित रूप से प्रहार करते है।

आह्वान करता हूँ इस लड़ाई में
मेरी स्याही को सुखने न दे
नव-विचारों का जल-प्रवाह कर
मेरी लड़ाई को और सघन मूसलाधार करे।
बिन्दु- बिन्दु से भर सबका उद्धार करें।

❑❑

शर्मा जी का लड़का

विवेक श्रीवास्तव, अधीक्षक, केन्द्रीय वस्तु एवं सेवाकर अपील आयुक्तालय, जयपुर

घर का माहौल एक दम बदल सा गया, मेरा एक वाक्य सबको स्तब्ध कर गया। सारी परम्पराओं, नियमों तथा समाज की दुहाइयां दी जाने लगीं।

''आपकी उमर देखिये, हमारी कितनी जग हँसाई होगी।''

''दिक्कत क्या है आपको?''

''मुझे तो पहले ही शक हो रहा था कि अभी तक आपने वसीयत नहीं की। रिटायर मतलब रिटायर।''

'' अब आप इस बारे में सोच भी कैसे सकते हैं?''

''हम आपके ही बच्चे हैं हमारे बच्चों के आप ही दादा हैं।''

''इतना पद रूतबा आपने देखा है तब अब इस कदम की जरूरत क्या आ गई?''

''सब आपके पैसे के कारण हो रहा है।''

मैंने कहा।

''अकेला हूँ मैं।''

''उमर किस काम की कब करने की होती है?''

''जिस समय थी उस समय की परिस्थितियों से वाकिफ हो तुम लोग?''

''कितने बंधन से उस समय।''

''कहते तो हैं कि आदमी आजाद होता है, पर वो कभी आजाद नहीं होता, आज तक मैं भी बस तुम लोगों का ही मुँह देखता रहा।''

''क्या मेरा दिल कभी नहीं धड़का? मंदिर शिवालय में कुछ देर मन बहला लेता हूँ, पर...''

आँखे छलक ही आईं।

''मुझे तुम लोगों से परेशानी नहीं पर तुम्हारी सबकी अपनी-अपनी जिंदगी है मैं नहीं चाहता कि उसमें इन्टरफियर करूँ।''

''तब मैं चाह कर भी अपने मन की नहीं कर पाया कि तुम लोगों को फ्यूचर में परेशानी होगी।''

''पर अब जात-धरम के बंधन भी कहाँ?''

''फिर भी चाचा हम क्या कहेंगे किसी को कि हमारे 70 साल के चाचा के शुभ विवाह में आये?''

''व्यंग्य मत करो विजय, अभी ओबिटूअरी छपवानी हो तो?''

''हमारी फैमिली में लोंजिविटी है।''

''बाबूजी 95 साल के थे।''

''अभी भी पहाड़ सी जिन्दगी पड़ी है।''

''फिर मैं तुम लोगों से ये सब कह क्यों रहा हूँ?''

''सारी जिन्दगी में तुम लोगों के लिए सोचता रहा और तुम मेरे एक डिसीजन से इतने विचलित हो गए?''

''क भी अपने को मेरे हाल में रख कर देखो।''

''आज ये पॉश एरिया में बंगला, ये गाड़ी! ये ही तो जिंदगी नहीं है, अगर घर में कोई इंतजार करने वाला ना हो।''

''समाज के लिए भी कितना करूँ?''

''जिसमें मेरा अपना कोई नहीं!''

''सब को चंदा चाहिए!''

''आप अब इस उमर में....''

''विजय मुझे मत सिखाओ, हद में रहो।''

''मुझे पता है, किस उमर की क्या जरूरत होती हैं?''

''एक बोलने वाला साथी चाहिए मुझे जिससे मैं अपने मन की बात कह सकूँ, जो मेरे लिए हो मेरा अपना हो एक्स्क्लुसिव्ली अपना।''

''कहानी, कविताएँ ढेरों लिख चुका हूँ जज्बात कागज पर लिख-लिख कर थक चुका हूँ।

'शर्मा जी का लड़का' से अलग कुछ होना चाहता हूँ।''

''मेरे बारे में क्या तुम लोग कभी सोचते हो?''

''मेरा अकेलापन क्या तुम्हें कभी अखरता है?''

''तुम रह सकते हो साक्षी के बिना एक दिन भी?''

''मैं बराबरी नहीं करता।''

''मैं जानता हूँ तुम लोग बुरे नहीं हो, पर सीमाएँ हैं तुम्हारी भी।''

''तुम्हारे सामने बहुत सी पारिवारिक जिम्मेदारियाँ हैं।''

''मैं एक्स्ट्रा सा फील करता हूँ।''

''कुछ समय के लिए ही सही, मैं किसी 'अपने' के साथ जिंदगी जीना चाहता हूँ।''

''कितने प्रपोजल आते थे उमर रहने पर और मैं मना कर देता था।''

''आज से 50 साल पहले जाति-धर्म के बंधन बहुत प्रबल थे। मैं साहस ही नहीं कर पाया, जब तुम लोगों की जिंदगी का वास्ता मुझे दिया गया, तब तो तुम लोग पैदा भी नहीं हुए थे।''

और

मैंने अपने आपको रोक लिया, मार ली अपनी इच्छाएँ। नहीं की शादी किसी ओर से!''

सब चौंक गये।

जैसे आशा ही नहीं थी कि किसी को कि मेरा भी कभी कोई अफेयर रहा हो सकता है।

इन पचास सालों में सब कुछ बदल गया है।

आज भी लोगों का प्रश्न चिन्ह है ''आपने शादी क्यों नहीं की?''

''हालांकि पोस्ट के डिस्टेंस के कारण पूछ नहीं पाते थे।''

सालों बाद आज किसी ने फिर पूछा ''सर आपने शादी क्यों नहीं की?''

''मेरे फादर और आपके फादर दोस्त रहे हैं, उनसे आपके फादर कहा करते थे -

''पता नहीं यार मेरा लड़का शादी ही नहीं करता।''

''चिंता थी सर उनको आपकी।''

''आजकल फादर डीमेंशिया में हैं।''

''पर उन्हें याद है, वो अभी भी आपके बारे में बात करते हैं। आप उनके लिए आज भी 'शर्मा जी का लड़का' हो।''

मजाक में मैंने कहा।

''यार नहीं की उस समय, अब बता दे।''

''सर, आर यू सीरियस?''

''सर वाकई में मेरी एक कजिन है जो आपने मेरी शादी में देखी भी होगी आपको याद हो तो मैंने परिचय भी करवाया था आपसे उसका।''

''वो भी अनमेरिड है, अच्छी पोस्ट से रिटायर हुई है।''

उसका मन लूँ? आप खुद मिल लो। इस उमर में परसेप्शन बदल जाते हैं।''

''हाँ लेना न यार।''

''मेरा नंबर लेले, मुझे मिस्ड कॉल दे।''

''ओके, सर।''

''पूछ लेता हूँ उससे, आज कल बहुत शादियाँ रिटायरमेंट के बाद भी लोग कर रहे हैं। आपको पॉजिटिव रेस्पोंस हुआ तो आपको फोन करूंगा।''

''यार माथुर, जरूरत इस उमर में ज्यादा महसूस होती है, किसी साथी की।''

फिजीकल की बात इतनी नहीं होती, मेंटली व्यक्ति बिल्कुल अकेला हो जाता है।''

''चल तो शाम को मैं तैयार रहता हूँ मुझे फोन पर बताना।''

''सर एक बात कहूँ?''

''आप तो मुझे शुरू से ही उसके लिए बहुत अच्छे लगते थे, पर मैं भी संकोच कर गया। कह ही नहीं पाया आपसे कभी इंटर कास्ट के कारण।''

हा हा हा!

और मैं घर पर बतला कर जल्दी से शाम होने और माथुर के फोन आने का इंतजार करने लगा।

बार-बार ये आशंका भी घेरती कि उसकी कजिन को भी परिवार का ये ही विरोध झेलना हुआ तो फिर?

और अचानक माथुर का नम्बर फ्लैश होने लगा और मेरा मन खिल उठा।

❑❑

राजभाषा पुरस्कार

वर्ष 2018-19 के दौरान हिंदी में सर्वश्रेष्ठ कार्य करने पर के.व.एवं सेवाकर, आयुक्तालय जयपुर की रा.भा.का. समिति द्वारा के.व.एवं सेवाकर संभाग-ई, जयपुर को प्रदत्त राजभाषा शील्ड प्राप्त करते हुए श्री बसंत गढवाल, उपायुक्त

केंद्रीय वस्तु एवं सेवाकर, जयपुर में लागू हिंदी टिप्पण एवं आलेखन प्रोत्साहन पुरस्कार योजना 2018-19

केंद्रीय वस्तु एवं सेवाकर अंकेक्षण, जयपुर में लागू हिंदी टिप्पण एवं आलेखन प्रोत्साहन पुरस्कार योजना 2018-19

सीमा शुल्क आयुक्तालय जयपुर की रा.भा.का. समिति द्वारा वर्ष 2018-19 के दौरान हिंदी में श्रेष्ठ कार्य करने पर प्रदत्त पुरस्कार

सीमा शुल्क संभाग-बीकानेर की राजभाषा शील्ड प्राप्त करते हुए श्री मुकेश कटारिया उपायुक्त

तकनीकी शाखा (मु.), जयपुर की प्रदत्त राजभाषा शील्ड प्राप्त करते हुए डॉ. पूनम मीना, उपायुक्त

प्रमाणपत्र प्राप्त करते हुए तकनीकी शाखा (मु.) जयपुर के अधीक्षक एवं निरीक्षकगण।

सीमा शुल्क आयुक्तालय, जयपुर में लागू हिंदी टिप्पण एवं आलेखन प्रोत्साहन पुरस्कार योजना 2018-19

राजभाषा समारोह – 2018

अन्तर्राष्ट्रीय सीमा शुल्क दिवस – 2019

अन्तर्राष्ट्रीय सीमा शुल्क दिवस – 2019

दिनांक 21 जून, 2019 को आयोजित अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस कार्यक्रम

खेल-कूद में विभागीय उपलब्धियां

अप्रैल 2019 में आयोजित पांचवे एम.एन.आई.टी. अन्तर्विभागीय क्रिकेट कप में विभागीय क्रिकेट टीम एवं श्री प्रमोद कुमार सिंह, प्रधान आयुक्त उपविजेता ट्रॉफी के साथ

मार्च 2019 में पुणे में आयोजित अखिल भारतीय सेवा टेनिस टूर्नामेंट प्रतियोगिता में रीजनल स्पोर्ट्स बोर्ड, जयपुर के कास्य पदक विजेता टीम के खिलाड़ी श्री महेश कुमार, अपर आयुक्त श्री बी.एल.मीना, संयुक्त आयुक्त, श्री मनीष कुलहरि, संयुक्त आयुक्त श्री जगदीश तंवर, अधीक्षक एवं अन्य।

अन्तर्राष्ट्रीय टेनिस फैडरेशन द्वारा दिनांक 8 अक्टूबर, 2018 से 14 अक्टूबर, 2018 तक टर्की में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय टेनिस प्रतियोगिता में 35 वर्ष से अधिक आयु वर्ग में श्री मनीष कुलहरि, संयुक्त आयुक्त, केन्द्रीय वस्तु एवं सेवाकर अंकेक्षण आयुक्तालय, जयपुर ने सिंग्लस एवं डबल्स में द्वितीय स्थान प्राप्त किया। इसके अलावा, मार्च 2019 में पुणे में आयोजित अखिल भारतीय सेवा टेनिस टूर्नामेंट प्रतियोगिता में जयपुर रीजनल स्पोर्ट्स बोर्ड का नेतृत्व प्राप्त करते हुए तृतीय स्थान प्राप्त किया।

दिनांक 21 अक्टूबर, 2018 से 3 नवम्बर, 2018 तक यूएसए में आयोजित यंग सीनीयर वर्ल्ड टेनिस चैपंयनसिप प्रतियोगिता में 45 वर्ष से अधिक आयु वर्ग में श्री जगदीश तंवर, अधीक्षक केन्द्रीय वस्तु एवं सेवाकर आयुक्तालय द्वारा भारत का प्रतिनिधित्व किया गया।

बाल चित्र

सुश्री अवनी पायल
पुत्री श्री संदीप पायल, सहायक आयुक्त

मास्टर चिराग पायल
भतीजा श्री संदीप पायल, सहायक आयुक्त

बाल चित्र

सुश्री सानिया ब्याड़वाल
पुत्री श्री रामजीलाल मीणा
निरीक्षक

मास्टर शौर्य शुक्ल
पुत्र श्रीमती नीता शुक्ल
वरिष्ठ अनुवादक

दिनांक 14 नवम्बर, 2018 को नवीनीकृत विभागीय जलपान गृह गोडावण का लोकार्पण कार्यक्रम

शौर्य गाथा

खींव सिंह राव, हैड हवलदार, केन्द्रीय वस्तु एवं सेवाकर आयुक्तालय, जोधपुर

प्रणाम करो इण माटी ने, कई रगत रलियोड़ा इण माटी में।
चले तीर आये अन्धारो, मंड़िया भाला लाटी में।।
बरछी री बौछारो हाले, बख्तर विखेर दिया इण घाटी में।
कड़ा बिन कटारो हाले, कई सूर वीर पोड गिया इण माटी में।।
वीर भामाशाह सिमरथ सुरा, मोहरा मेली इण गाड़ी में।
महरावल ज्यू राणो पडियों, नाक नमण कर इण माटी ने।
लाल गरजती तोपा चलती, शुरा चिपकिया काढी में।।
तलवारों री चीखी पाणा, हुरी निकले घाटी में।
मेवाड़ धणी मुगलो ने मारे, तुरक डुबकिया इण भाटी में।
लाटो लेता शुरा हाले, हल-हाले ज्यों माटी में।।
चेतक चढ़ियो राणो रण में, घुरे नगारा घाटी में।
सूर्यवंश सोगन इकालिंग री, वार झेलणो छाती में।।
बीस बरस रा नैना योद्धा, हाथ घालियो पाती में।
उतनी नहीं मुकलावी मेहंदी धरा छोड़ दीनो लाडी ने।
पैर केसरिया केहरी बणिया, शुरम चढियो वरष साठी में।।
राजपुताणिया जीवत जलगी, केर कुमठ री काठी में।
चेतक पठियो राणो रण में, घेरो घालियो घाटी में।।
गाजर मूली ज्यो बोट दिया, खैगाल कर दियो इण घाटी में।
प्रणाम करो इण माटी ने, कई रगत रलियोड़ा इण घाटी में।।
पांचों शस्तर बाँध ने, रण चढियो भरतार।
उणियारो भर आँख में, लारे प्राण छोड़ दिया नार।।
इण माटी री महिमा भारी, कई इतिहास लिखिया इण माटी में।
केसरिया बना केसरियो पैरियो, कमर कसी तलवार।
हर-हर महादेव बोलिया, रण झुन्यो झुन्जार।।
काँठल उपड़ी काल री, हिये में थी हिंदवाणी राग।
एवराया अकबर करी, पण झुको नहीं केशरिया पाग।।
भाटे-भाटे हुआ भोमिया, खून हालियो खाला में।
काफर कुक-कुक ने मर गिया, कई बह गया इण नाला में।।
जीव री जोखिम फिरे दौड़ता, रास्तो नहीं लादे इण घाटी में।
काफिर फौजी पड़ी कुकबो, छोटी पड़ गई बाटी में।।
चारो ओर सू बरछी हाले, दुश्मन आयो ऑटी में।
महाराणा रो भालो हाले, हीरा चमके माटी में।।
सुवामण रो भारी थालो, आयो आठ फुट लाठी में।
पहिले झटके मावत मारियो, अकबर आयो आटी में।।
मेवाड़ धणी गहलोत गादी, हिंदवाणी सूरज साखी में।
राव सुरजमल पौत्र खीव सिंह करी विनती जगतम्बा रे सरणे सुणी सांभली भारवी में।।
अबकी पुल में आडी आवे, सांच राखजो लाठी में।
प्रणाम करो इण माटी ने, कई रगत रलियोड़ा इण घाटी में।।

❑❑

विश्व सीमा शुल्क संगठन द्वारा जयपुर में आयोजित रणनीतिक कार्य योजना : एक रिपोर्ट

डॉ. पूनम मीना, उपायुक्त, सीमा शुल्क (निवारक) आयुक्तालय, जोधपुर

विश्व सीमा शुल्क संगठन की संपर्क प्वाइंट बैठक की मेजबानी भारत द्वारा दिनांक 13.11.2019 से 16.11.2018 तक होटल मैरियट, जयपुर में की गई। रीजनल कानटेक्ट प्वाइंट मीटिंग का आयोजन रीजनल ऑफिस फॉर कैपिसिटी बिल्डिंग (ROCB) तथा भारतीय सीमा शुल्क द्वारा संयुक्त रूप की गई थी। इस बैठक में श्री एस. रमेश, अध्यक्ष (वर्तमान में सेवानिवृत्त), सीबीआईसी एवं उपाध्यक्ष एशिया पैसेफिक रीजन तथा अखिल सीमा शुल्क संगठन एशिया पैसेफिक रीजनल स्ट्रक्चर तथा विश्व सीमा शुल्क संगठन के 33 अधिकारियों ने भाग लिया। बैठक में राष्ट्रीय तथा क्षेत्रीय स्तर पर क्षमता निर्माण प्रगति तथा सीमा शुल्क सुधार तथा विशेष रूप से आर ओ सी बी द्वारा डिजाईन किए गए वार्षिक रोडमैप के माध्यम से तथा रीजनस् 2018-20 के रणनीतिक योजना के कार्यान्वयन तथा सीमा शुल्क प्रशासन द्वारा स्वयं के आत्म-मूल्यांकन प्रक्रिया की निगरानी की अनुमति दी गई है। संशोधित क्योटो संधि, डिजिटल सीमा शुल्क, ई-कॉमर्स, क्षेत्रीय परियोजनाएं तथा इसकी प्राथमिकताओं, सहायक आवश्यकताओं की पहचान करने हेतु शुरू की गई प्रक्रिया तथा क्षेत्रीय क्षमता निर्माण की संभावनाओं की समीक्षा पर विचार-विमर्श भी इस बैठक में किया गया है। इस दौरान भारत के कैबिनेट सचिव की अध्यक्षता में राष्ट्रीय व्यापार सुविधा समिति द्वारा व्यापार सुविधा हेतु किए गए प्रयासों का भी प्रदर्शन किया गया।

कार्यक्रम के दौरान नई रणनीतिक योजना 2019-2022 से संबंधित एक कार्यशाला का भी आयोजन किया गया। इसमें कुल छह क्षेत्रीय कार्याशालाएं आयोजित हुई जिसमें एशिया पेसेफिक रीजन के साथ नई रणनीतिक योजना पर सदस्यों के साथ परामर्श भी किया गया। इस कार्यशाला की अध्यक्षता संयुक्त रूप से श्री रिकार्डो ट्रेविनो चापा, प्रमुख उप सचिव, विश्व सीमा शुल्क संगठन तथा श्री एस. रमेश, अध्यक्ष, (वर्तमान में सेवानिवृत्त) केन्द्रीय अप्रत्यक्ष कर एवं सीमा शुल्क बोर्ड तथा विश्व सीमा शुल्क संगठन काउंसिल एशिया पैसिफिक क्षेत्र के उपाध्यक्ष द्वारा की गई थी। ये कार्यशाला बहुत महत्त्वपूर्ण थी। इनमें रणनीतिक योजना 2019-2022 को तैयार करते समय विश्व सीमा शुल्क संगठन के सदस्यों का सलाहकार दृष्टिकोण प्रदर्शित किया गया था । सदस्यों द्वारा यह महसूस किया गया कि वास्तविकताओं पर आधारित सुसंगत दस्तावेजों को प्रस्तुत करने के क्रम में विश्व सीमा शुल्क संगठन के क्षेत्रों की प्राथमिकताओं तथा चुनौतियों को ध्यान में लिया जाना चाहिए। एशिया पैसिफिक क्षेत्र में 33 सदस्य देश हैं। एशिया को

पैसिफिक क्षेत्र का उपाध्यक्ष बनाने के बाद से ही नई-रणनीतिक योजना को अंतिम रूप देने में भारत बहुत ही सक्रिय भूमिका निभा रहा है। इस कार्यशाला के दौरान अन्य महत्वपूर्ण बिंदुओं पर भी सकारात्मक चर्चा की गई थी। जून, 2019 की कार्यवधि तक विश्व सीमा शुल्क संगठन द्वारा नई सामरिक योजना को अपनाने संबंधी चर्चा भी एजेंडे का एक महत्त्वपूर्ण बिंदु था। इस कार्यशाला में नई रणनीतिक योजना की समस्त सामग्री के आधार पर चर्चा का मुख्य केंद्र बिंदु सदस्यों की प्राथमिकताओं के पर्यवेक्षण का परिणाम, वर्तमान रणनीतिक योजना के तहत संसाधन आवंटन, रणनीतिक योजना तथा पर्यावरण जांच के मध्य संबंध तथा एक नए रणनीतिक मैप हेतु एक ड्राफ्ट प्रस्ताव की प्रस्तुति था। इन क्षेत्रीय कार्यशालाओं का आयोजन के माध्यम से विश्व सीमा शुल्क संगठन सचिवालय ने पारदर्शिता के मामले में अपने दायित्वों को पूरा करने का प्रयास किया है। एक सदस्य संचालित संगठन के रूप में अपने जनादेश के संबंध में भी यह सुनिश्चित किया गया है कि उसके सदस्यों के विचारों को विश्व सीमा शुल्क संगठन रणनीतिक योजना 2019-2022 में शामिल किया जाए। ❑❑

नव ऊर्जा

घोर अंधकार को अपने शौर्य प्रकाश से तुम तोड़ दो
निराशा के हर क्षण को तुम नव ऊर्जा में मोड़ दो।
तीक्ष्ण आलोचना के कर्कश करतलों को
निर्भय हो कर्मठ बन पीछे तुम छोड़ दो।
हृदय में व्याप्त हर तामसी प्रवृत्तियों को
अडिग आत्मबल के प्रहार से तुम फोड़ दो।
आंतरिक दुर्बल मनोवृत्तियों के किंचित प्रसार को
स्वयं का शत्रु समझ उसकी बाँहों को तुम मरोड़ दो।
दुर्गम लक्ष्य को भेदने के साहसी प्रयत्न को
बाह्य से ही नहीं अपितु अंतर्मन के द्वंद्व से तुम होड़ दो।
रुग्ण पड़ चुकी पुरातन रूढ़ियों को
नवविचारों के प्रवाह से जड़ से तुम झिंझोड़ दो।
जीवन के सत्कर्मों को एक मंत्र में बांध लो
मानवता की प्रत्येक कड़ी को तंतुओं में तुम जोड़ दो।

❑❑

गज़ल

मंजूर अली अंसारी, अपर आयुक्त, सीमा शुल्क (निवारक) आयुक्तालय, जयपुर

कभी तो इस रात का खात्मा होगा
कभी तो इंसानियत का मर्तबा होगा।

दिल में उम्मीदों का चिराग जलाएं रखे
कभी तो हम पर उजाला मेहरबाँ होगा।

कमी नहीं है हमारे मजहबी ख्यालों में
कभी तो जात ए आदम में अदल[1] रावा होगा।

हाथों में सदाकत[2] का परचम उठाये रखे
कभी तो उनमें नफरतों का नातवाँ[3] होगा।

सभी के रगों में रंगे खून एक सा ही है
कभी तो 'मंजूर' उनके भी अक्ल जवां होगा।

1. न्याय 2. सच्चाई 3. विनष्ट

❑❑

जीएसटी के दो साल बेमिसाल

अंकित गुप्ता, निरीक्षक, कार्यालय मुख्य आयुक्त, केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर, जयपुर

01 जुलाई, 2017 के दिन आया वो ऐतिहासिक लम्हा
जब जीएसटी ने एक राष्ट्र, एक कर,
एक बाजार का सच किया सपना।
अर्थव्यवस्था के सुदृढ़ीकरण ने छुए नए आयाम
जीएसटी देगा देश के कर-संग्रहण में अहम योगदान।
5,12,18 और 28 प्रतिशत कर की दर चार
पारदर्शी एवं डिजिटल रिटर्न प्रक्रिया ने
बनाया व्यापार सुगम एवं सरल।
आर्थिक एवं समावेशी विकास में आयी नई रफ्तार

इसी कारण जीएसटी को कहा गया
देश की कर-व्यवस्था में मील का पत्थर।
जीएसटी से कर-चोरों की आई शामत
महँगाई से मिली आम जन को राहत।
जीएसटी ने विभिन्न करों के बोझ का
मिटाया निशान
ई-वे बिल ने बनाया माल परिवहन को और भी आसान।
जीएसटी मे दिलाई भारतीय अर्थव्यवस्था को
विश्व-पटल पर नई पहचान।

❑❑

स्वच्छ भारत अभियान - राजनीतिक, आर्थिक व सामाजिक पहलू का विश्लेषण

राजभाषा पखवाड़ 2018 के अंतर्गत आयोजित निबंध प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार पुरस्कृत

देवेश कुमार शर्मा, निरीक्षक, केंद्रीय वस्तु एवं सेवाकर अंकेक्षण आयुक्तालय, जयपुर

प्रस्तावना :

स्वच्छ भारत अभियान भारतीय राजनीति के विकास कार्यक्रमों का ध्रुव तारा कहा जा सकता है। वर्ष 2014 में चुनी गई भारतीय जनती पार्टी की सरकार के विकास कार्यक्रमों की शृंखला की एक महत्त्वपूर्ण योजना है। घोषणायें, चर्चायें, निर्धारित लक्ष्य व उनकी प्राप्ति के अन्तर्गत इसका विश्लेषण किया जा सकता है।

प्रारंभिक भूमिका :

स्वच्छ भारत अभियान की घोषणा से पूर्व की स्थिति का अगर विश्लेषण किया जाये तो भारतीय मानस-पटल पर स्वच्छता को लेकर इतनी जागरूकता कभी नहीं रही जितनी विगत 1-2 वर्षों में रही है।

इस योजना के पूर्व देश दो हिस्सों में बंटा हुआ था एक भारत, दूसरा इण्डिया। भारत में वे लोग बसते थे जिनकी झुग्गीस झोपड़ियाँ, बस्ती कचरागाह है या कचरागाह में बस्ती है, मोहल्ले में कीचड़, गंदगी है या कीचड़ व गंदगी में मोहल्ला है। जबकि इण्डिया में वे लोग बसते थे जिनके पास साफ-सुथरे बंगले थे, सफाई कर्मचारी थे, स्वच्छ वातावरण, साफ पानी, साफ हवा थी।

परन्तु इस योजना ने इन दो भागों को स्वच्छता के मामले में एक स्तर पर लाने का प्रयास तो किया है।

विगत वर्षों में जगह-जगह कचरे के ढ़ेर, गंदगी, मलबा देखने को मिलता था परन्तु अब प्रायः वैसे दृश्य देखने को कम मिलते हैं। पूर्व की तुलना में स्वच्छता के मामले में स्थिति में काफी सुधार हुआ है।

राजनीतिक पक्ष :

स्वच्छ भारत अभियान वर्तमान सरकार के सबसे महत्वाकांक्षी अभियानों में से एक है। महात्मा गांधी जिन्होंने आम जीवन में स्वच्छता पर बल दिया था उन्हीं के स्वप्न को पूर्ण करने हेतु स्वच्छ भारत - एक कदम स्वच्छता की ओर, ऐसा नारा देकर इस अभियान को एक जन-आंदोलन का रूप दिया गया है।

राजनीतिक स्तर पर प्रत्येक राज्य सरकार को लक्ष्य निर्धारित किये गये है कि वे अपने राज्य को शीघ्रतिशीघ्र खुले में शौच मुक्त (ओडीएफ) व स्वच्छ राज्य का दर्जा प्राप्त कर ले। इस हेतु विभिन्न राज्यों द्वारा उन लक्ष्यों की पूर्ति हेतु विभिन्न अभियान चलाये गये हैं। राजस्थान के बीकानेर जिले में चलाये गये ''बांको बीकाणो'' अभियान की राष्ट्रीय स्तर पर प्रशंसा की गई है।

राजस्थान में प्रत्येक ग्राम पंचायत में सरपंच निर्वाचन हेतु शैक्षणिक योग्यता के अतिरिक्त उसके घर में शौचालय होना आवश्यक है। यह एक प्रशंसनीय कदम है ताकि सामान्य जन को स्वच्छता की प्रेरणा मिल सके। 'वेस्ट मैनेजमेंट' के तहत आर्थिक आय के रूप में प्रयुक्त किया जाना व वहाँ के जिला कलेक्टर द्वारा इस कदम के लिए राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त करना पूरे देश के लिए प्रेरक स्तम्भ का कार्य करता है। स्वच्छ भारत अभियान के लिए सरकार द्वारा प्रिन्ट, इलेक्ट्रॉनिक व सोशल मीडिया पर काफी प्रचार किया गया है। इस कदम से सरकार ने दर्शाया है कि भारत की सरकार भारतीय संविधान के लिए प्रतिबद्ध है जो भारत को एक लोक-कल्याणकारी राज्य घोषित करता है व संविधान के नीति निर्देशक तत्व के अन्तर्गत यह स्पष्ट किया गया है कि राज्य अपने नागरिकों को स्वच्छ वातावरण उपलब्ध कराये ताकि नागरिक स्वस्थ रह सके।

यह अभियान वर्तमान भारतीय राजनीति की रीढ़ कहा जाये तो कोई अतिश्योक्ति नहीं है। विचारक ए.जी. गार्डनर के अनुसार - ''स्वच्छता किसी राज्य के खून की शुद्धता है।''

आर्थिक पक्ष :

इस अभियान के आर्थिक पक्ष पर अगर विचार किया जाये तो इसके दोनों पक्षों पर विचार किया जायेगा।

(1) आय (2) व्यय

इस अभियान हेतु आय विभिन्न स्त्रोतों से जुटाई गई है जो कि निम्नांकित है :

(अ) स्वच्छ भारत सेस :- यह 14.11.2015 से सेवाकर प्रदाता व ग्राही कारोबारियों पर लगाया गया है। इसके

अन्तर्गत सेवा के मूल्य का 0.5% स्वच्छ भारत सेस (एस.बी.सी. सेस) के तहत भारतीय राजकोष में जमा किया जायेगा।

सेस से यहाँ तात्पर्य यह है कि जिस उद्देश्य या नाम से यह कर लगाया जाता है, इससे प्राप्त आय को उसी उद्देश्य में खर्च किया जाता है। अतएव स्वच्छ भारत सेस से प्राप्त आय को भारत के स्वच्छ भारत अभियान के लिए ही खर्च किया जायेगा।

(ब) कारपोरेट सोशल रिस्पांसिबिलिटी (सीएसआर) : इसके तहत कम्पनियों को यह निर्देशित किया जाता है कि वे अपनी आय का 2% भारत की आर्थिक योजनाओं, सामाजिक कार्यक्रमों में खर्च करें।

यह कार्य वे स्वेच्छा से भी कर सकती है। वर्तमान में स्वच्छ भारत अभियान को बढ़ावा देने हेतु अधिकांशतः कम्पनियों, स्कूलों, गाँवों में शौचालय निर्माण, कचरा पात्रों का विरण इत्यादि गतिविधियां कर रही है।

(स) अनिवासी भारतीयों से प्राप्त आय : इस अभियान को बढ़ावा देने हेतु सरकार ने अनिवासी भारतीयों से अनुरोध किया है कि वे अपना निवेश/दान इस अभियान को करें ताकि इस अभियान को सफल बनाया जा सके।

(द) स्वयं सहायता समूह : ग्राम पंचायतों में स्वयं सहायता समूह बनाकर भी सार्वजनिक शौचालयों का निर्माण किया जा रहा है। सफाई को बढ़ावा देने हेतु कई भामाशाहों (दानदाताओं) द्वारा कचरापात्र वितरित किये जा रहे हैं।

उपर्युक्त आय के स्रोतों के अतिरिक्त भी अन्य स्रोतों से प्रात आय को इस अभियान हेतु प्रस्तुत किया जा रहा है।

स्वच्छता को आर्थिक पक्ष से इस तरह भी संबद्ध किया जा सकता है कि भारतीय संस्कृति में यह मान्यता है कि स्वच्छ घर में ही लक्ष्मी का निवास होता है। भारत की आर्थिक प्रगति भी तभी संभव है जब हम स्वच्छता के मापदण्डों को पूरा कर लें। इसी को बढ़ावा देने हेतु भारतीय जनमानस में इस अभियान को खुशहाली व सम्न्नता से जोड़कर बताया गया है।

सामाजिक पहलू :

यह अभियान मूलतः भारतीय समाज की मनोवृत्ति को बदलने के लिए ही चलाया गया है। हम भारतीय स्वच्छता को लेकर कभी जागरूक रहे ही नहीं। अपना घर साफ रहे, बाहर चाहे चारों तरफ कचरा, गंदगी हो हमें कोई फर्क नहीं पड़ता। सरकारी बसों, ट्रेनों में कचना फैलाना हमारी मूल अधिकार सा बन गया था। सड़क पर कचना फैलाना हमारी प्रवृत्ति थी। दीवारों पर पीक थूकना, कही भी मूत्र-मल का त्याग करना हमारी आदतों में शुमार था।

इसी सोच को बदलने हेतु इसी अभियान की आवश्यकता हमारे समाज को थी। सामाजिक पक्ष इस अभियान का सबसे महत्त्वपूर्ण पक्ष है। सरकार चाहे कितने ही अभियान चला ले, कितना ही व्यय स्वच्छता को बढ़ावा देने वाली योजनाओं पर कर ले, परन्तु जब तक हम भारतीयों की मनोवृत्ति नहीं बदलेगी तब तक यह अभियान अधूरा ही रहेगा।

इस अभियान ने लोगों की विचारधारा को बदला है। अब लोग कचरा फैलाने से पहले कचरा संग्रहण वाहन का इंतजार करते हैं, मूत्र त्याग करने हेतु सार्वजनिक शौचालय देखते हैं। खुले में शौच से लगभग सारा राष्ट्र मुक्त हो चुका है। लड़कियाँ उस घर में शादी करने से मना कर देती हैं, जहाँ शौचालय नहीं है। लोग जनप्रतिनिधियों को सफाई नहीं होने पर शिकायत करने लगे हैं। यह एक बहुत बड़ी सामाजिक क्रांति नहीं तो और क्या है? स्वच्छ भारत अभियान का शुभंकर कजोड़ी देवी (हिमाचल प्रदेश) को बनाया गया है जिन्होंने शौचालय बनाने हेतु अपनी प्रिय बकरी तक को बेच डाला था।

लोगों के सामाजिक स्तर के मापदण्डों में अब स्वच्छता मुख्य पैमाना बन गया है। प्राचीन संस्कृति की सोच सोडहं - ''जैसा मैं हूँ, वैसा ही वह है।'' सभी को स्वच्छता को बढ़ावा देने की भावना बलवती हुई है। कई एनजीओ कच्ची बस्तियों में सफाई के लिए एकत्र हुए है जो लोगों में इस अभियान की जागृति को दर्शाता है। अब हमारे समाज को ही तय करना है कि किस दिशा में हम हमारे राष्ट्र को ले जाना चाहते हैं, कचरे के ढेर पर बैठा भारत या स्वच्छ, निर्मल व अतुल्य भारत।

उपसंहार :

जिन लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए यह अभियान चलाया गया था, अभी तक वे लक्ष्य पूर्णतया प्राप्त नहीं हुए है। लेकिन जनमानस में स्वच्छता को लेकर जागरूकता बढ़ी है, परिणाम नजर आने लगे हैं। राष्ट्र एक गंदगी भरे राष्ट्र से स्वच्छ व निर्मल राष्ट्र की ओर अग्रसर है। यदि लक्ष्य प्राप्त हो जाते हैं तो भारत राजनैतिक, आर्थिक व सामाजिक पक्ष में विश्व का सिरमौर बन जायेगा व स्वप्नदृष्टा महात्मा गाँधी के स्वच्छ भारत के स्वप्न पूर्ण होंगे परन्तु कुछ समय अवश्य लग जायेगा। अंत में इस अभियान के प्रयासों हेतु अंतिम पंक्तियां :-

''थोड़े पर फैलाये है परिंदों ने,
एक उड़ान अभी बाकी है,
अभी तो नापी है कुछ गज जमीं हमने,
सारा आसमान अभी बाकी है।।''

❑❑

कहानी मेरी सी

वैभव शर्मा पुत्र श्री अरविन्द कुमार शर्मा, अधीक्षक, सीमा शुल्क आयुक्तालय (निवारक), जोधपुर

शायद उस रात की रफ्तार में भागा जा रहा था मैं
गुमनाम अँधेरे से लड़ा जा रहा था मैं
पेट मेरा खाली था पर चिंता मुझे इस बात की कभी न थी
मेरा परिवार सुकून से सो रहा था
इस रात को भी होनी आज काली ही थी
माँ बापू सो गए थे
बच्चे भी थक चुके थे
मैं चला जा रहा था
कदम बढ़ा जा रहा था
बोझ कांधे पे ज्यादा था
सवेरा बस होने ही वाला था
मालिक मुझसे भी आ मिला
कुछ पैसे थमा मेरे हाथ में
दो टुकड़े पत्थर के भी पकड़ा गया
बोले वो बस जोर आवाज में कल तुझको जो काम दिया
जहां भीड़ मिले वर्दी वालों की
उस पर तू गुस्से के बाण चला
पत्थर दो मेरे हथियार बने
जब भोर हुए गुस्सा भड़का
यहाँ आग लगी वहाँ साँस फूली
क्यों इन मासूमों पर अत्याचार हुआ
दिल रो रहा था
दुख से कदम मेरे कुछ भारी हुए पत्थर छूटा
जो धरती माता को चीरता हुआ मेरे सीने पे हावी हुआ
दुनिया का दस्तूर ही कुछ ऐसा है
जो भूखा है उसे खाना नहीं
जो सूखा है उसे पानी नहीं
खून बहेगा सड़कों पे जहाँ पत्थर ही भगवान हुए
इंसान तो क्या हैवान भी रो दे
ये मंजर-ए-तूफान हुआ
मैं क्या
मेरी वफा क्या
मेरा खुदा जो तूने चुना वो मान लिया
दो रोटी पे भी जान मांग ले वो खुदा किस काम का हुआ
अपनों पे पत्थर फैंक रहा हूँ मैं
वो हो जो बहक रहा हूँ
मेरे बच्चे हुए परिवार हुआ
उनके लिए ही तो जीता हूँ
मैं चार पैसों के लालच में नहीं बिका
कीमत तो बहुत ज्यादा थी
मैं उस भूख के हाथों बिका जो मेरे बच्चे को आयी आई थी
मैंने उठाया हथियार और किया अत्याचार
कुछ भयानक सा मंजर हुआ
देश की सुरक्षा करने वाले का सर मेरे ही हाथों फूट गया
ये पाप मुझसे न धुलेगा, ना कभी मैं इसको धोना चाहता हूँ
हैवान नहीं भगवन नहीं
पर ये जो मेरे चारों तरफ है
ये मेरे लिए आज से इंसान नहीं
मुझे चार पैसे ज्यादा मिले
मेरा बेटा भूखे पेट न मरे
साहब मैं आपकी सेना में भी आऊँगा
फिर पत्थर मेरा हथियार हुआ
और भूख से जंग में जीत गया
इन्सानियत बिक गयी
जीवन में पाप कोई अपराध न रहा।

❑❑

जिन्दगी की सीख

सुप्रज्ञा कौशिक, भांजी श्रीमती नीता शुक्ल, वरिष्ठ अनुवादक

जिन्दगी ने मुझे जीना सिखाया है
हर हाल में खुश रहना सिखाया है
हंसो तो खुलके, रोओ तो खुलके
दुनिया को खुली बांहों से महसूस करना सिखाया है
जिन्दगी ने मुझे जीना सिखाया है।

मुश्किलें हजार हैं, राहें अनेक
उनमें से सही राह चुनना सिखाया है
जिन्दगी की जंग में लड़ना सिखाया है
जिन्दगी ने मुझे जीना सिखाया है।

न इसने मुझे चुपचाप रहना सिखाया है
न इसने मुझे आंख बन्द रखना सिखाया है
लेकिन इसने मुझे देखकर गलत को रोकना सिखाया है
जिन्दगी ने मुझे जीना सिखाया है।

खुली हवा में सांस लेना सिखाया है।
दूसरों के साथ रहना सिखाया है
बंद कमरा आज तक किसको भाया है ?
जिन्दगी ने मुझे जीना सिखाया है।

❑❑

ले चला दिल कहां...

जो फूल कल मुरझाया था
आज फिर खिला है
एक रात कल हुई थी
आज सवेरा फिर निकला है
गम के बादलों ने जब हमें घेरा
रोशनी बनके हर बार कोई उभरा है
गहरी नींद के सन्नाटे के बाद
ये दिल हर रोज जगा है
एक नई उम्मीद और एक नया रास्ता लिए
नई दास्तान ये लिखने चला है।

हजारों ख्वाहिशें हैं और सपने अनेक
हर सपने को सच करने में लगा है
एक नए सूरज को ढूंढने में ये
लाखों मील चला है
जहां तक नजरें जाती हैं
वहां तक पहुंचना है इसे
इसी चाहत में ये न जाने
कहां कहां भटका है
ए-दिल-ए-नादान कब तू थमेगा
सारे जहां की सैर करके भी
तू घर के आंगन में आकर ही रुकेगा।

❑❑

हिन्दी टिप्पण–आलेखन एवं मसौदा लेखन प्रोत्साहन योजनाएँ

कार्यालय में भारत सरकार, वित्त मंत्रालय,राजभाषा विभाग द्वारा लागू प्रोत्साहन योजनाओं के अंतर्गत वित्त वर्ष 2018–19 के दौरान हिन्दी में सर्वाधिक डिक्टेशन देने तथा मूलरूप से हिंदी में टिप्पण आलेखन एवं मसौदा लेखन के लिए निम्नलिखित अधिकारियों एवं कर्मचारियों को नकद पुरस्कार प्रदान किए गए।

कार्यालय प्रधान आयुक्त, केन्द्रीय वस्तु एवं सेवाकर–जयपुर

हिंदी टिप्पण/आलेखन प्रोत्साहन पुरस्कार :–		**राशि (रु. में)**
प्रथम पुरस्कार (2)	1. श्री विकास पाल, कार्यकारी सहायक	5000/–
	2. श्री मान सिंह गुर्जर, कर–सहायक	5000/–
द्वितीय पुरस्कार (3)	1. श्री तेजपाल मौर्य, कार्यकारी सहायक	3000/–
	2. श्री महेश कुमार चौधरी, कर–सहायक	3000/–
	3. श्री तिलक शर्मा, कनिष्ठ लिपिक	3000/–
तृतीय पुरस्कार (5)	1. श्री राधेश्याम सैनी, प्रशासनिक अधिकारी	2000/–
	2. श्री महेश कुमार कालेर, निरीक्षक	2000/–
	3. श्रीमती राजरानी शर्मा, कर–सहायक	2000/–
	4. श्री अनिल कुमार साहू , कर–सहायक	2000/–
	5. श्री हेमंत खोंलिया, कनिष्ठ लिपिक	2000/–

हिंदी टिप्पण/आलेखन प्रोत्साहन पुरस्कार :–		**राशि (रु. में)**
प्रथम पुरस्कार (2)	1. श्री शांता प्रकाश टेलर ,कर सहायक	5000/–
	2. श्री प्रदीप भूरिया, कर–सहायक	5000/–
द्वितीय पुरस्कार (3)	1. श्री यशपाल सिंह, कर–सहायक	3000/–
	2. श्री रमेश शर्मा, कर–सहायक	3000/–
	3. श्री राम गोपाल यादव, कनिष्ठ लिपिक	3000/–
तृतीय पुरस्कार (5)	1. श्री अमित जैन, निरीक्षक	2000/–
	2. श्री विजय सिंह, निरीक्षक	2000/–
	3. श्री रामजी लाल मीना, निरीक्षक	2000/–
	4. श्रीमती निधि चाहर, कर–सहायक	2000/–
	5. श्री फूलसिंह महावर, कर–सहायक	2000/–

सीमा शुल्क आयुक्तालय–जयपुर

हिंदी टिप्पण/आलेखन प्रोत्साहन पुरस्कार :–		**राशि (रू – में)**
प्रथम पुरस्कार (2)	1. श्री विरेन्द्र सिंह यादव, संचार–सहायक	5000/–
	2. श्री पवन डोगरा, कर–सहायक	5000/–
द्वितीय पुरस्कार (3)	1. श्री जसपाल सिंह नरुला, प्रशासनिक अधिकारी	3000/–
	2. श्री मनीष कुमार, कर–सहायक	3000/–
	3. श्री नेमीचन्द शर्मा, कनिष्ठ लिपिक	3000/–
तृतीय पुरस्कार (5)	1. श्री अशोक कुमार सेईवाल, कर–सहायक	2000/–
	2. श्री संतोष कुमार शर्मा, पर्यवेक्षक	2000/–
	3. श्री सुभाष बंशीवाल, कर–सहायक	2000/–
	4. श्री रामरूप मीना, कार्यकारी सहायक	2000/–
	5. श्री संतोष कुमार मीना, कर–सहायक	2000/–

इसके अतिरिक्त विभिन्न आयुक्तालय के राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा भी राजभाषा में सर्वश्रेष्ठ कार्य का निष्पादन पर अधीनस्थ संभाग कार्यालय तथा शाखा को प्रोत्साहन स्वरूप राजभाषा शील्ड एवं प्रमाण–पत्र प्रदान किया जाता है। वर्ष 2018–19 के दौरान ये निम्नानुसार प्रदान किए गए :–

1. केंद्रीय वस्तु एवं सेवाकर आयुक्तालय, जयपुर – (1) केंद्रीय वस्तु एवं सेवाकर संभाग–ई, जयपुर
2. सीमा शुल्क (निवारक) आयुक्तालय, जोधपुर – (1) सीमा शुल्क संभाग, श्रीगंगानगर
   (2) तकनीकी शाखा (मु.), जयपुर

❑❑

भारत माँ के भाल पर

सजी स्वर्णिम बिंदी हूँ

मैं भारत की बेटी

आपकी अपनी हिंदी हूँ.....

राजभाषा पखवाड़ा 2018 : एक रिपोर्ट

आजादी के बाद 14 सितंबर, 1949 को संविधान सभा में हिंदी को राजभाषा के रूप में स्वीकार करने पर इस दिवस की स्मृति में भारत सरकार द्वारा प्रतिवर्ष 14 सितम्बर को हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है। इसी परिप्रेक्ष्य में केंद्रीय वस्तु एवं सेवाकर एवं सीमा शुल्क आयुक्तालय, जयपुर में दिनांक 01.09.2018 से 15.09.2018 तक राजभाषा पखवाड़ा तथा 14 सितम्बर को हिंदी दिवस का आयोजन समारोहपूर्वक किया गया। इस पखवाड़े में विभाग के समस्त अधिकारियों/कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया ।

पखवाड़े के दौरान हिंदी के प्रचार-प्रसार को बढ़ावा देने के उद्देश्य से (i) कार्यालय प्रधान आयुक्त, केंद्रीय वस्तु एवं सेवाकर, जयपुर (ii) कार्यालय आयुक्त, केंद्रीय वस्तु एवं सेवाकर अंकेक्षण, जयपुर तथा (iii) कार्यालय आयुक्त, सीमा शुल्क (निवारक), जोधपुर में हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु हिंदी संबंधी चार प्रतियोगिताएं हिंदी निबंध, हिंदी श्रुतिलेखन, हिन्दी टिप्पण एवं आलेखन तथा कम्प्यूटर पर हिन्दी टंकण प्रतियोगिताओं के आयोजन किया गया।

14 सितम्बर को आयोजित हिंदी दिवस समारोह का शुभारम्भ पारंपरिक रूप से दीप प्रज्ज्वलन के साथ किया गया। दीप प्रज्ज्वलन के बाद मंचासीन अधिकारियों (आयुक्तगण) को पुस्तक भेंट कर सम्मान किया गया।

समारोह में श्री बी.एल. मीना, संयुक्त आयुक्त ने सभी का स्वागत किया तथा राजभाषा संबंधी प्रगति विवरण प्रस्तुत किया। राजभाषा प्रगति विवरण के दौरान उनके द्वारा बताया गया कि इस कार्यालय में सभी स्तर के अधिकारी एवं कर्मचारी सहज एवं सरल रूप से आसानी में हिंदी में कार्य कर रहे हैं जिसके परिणामस्वरूप इन आयुक्तालयों को प्रतिवर्ष किसी न किसी स्तर पर राजभाषा के सफल कार्यान्वयन हेतु पुरस्कार प्राप्त होते रहते हैं।

श्री सुभाष चन्द्र अग्रवाल, आयुक्त, सीमा शुल्क, जयपुर ने भी अपने भाषण के दौरान कार्यालय में हिन्दी में किए जा रहे कार्य की सराहना करते हुए कहा कि फरवरी, 2018 के दौरान संसदीय राजभाषा समिति द्वारा आयुक्तालय के राजभाषा निरीक्षण तथा अन्य निरीक्षणों में भी कार्यालय में हिंदी में किए जा रहे राजभाषा कार्यों की प्रशंसा की गई है। उन्होंने कम्प्यूटर पर यूनिकोड के माध्यम से हिंदी में कार्य करने पर जोर दिया। उन्होनें यह भी अपील की कि हिंदी बहुत ही सरल, सहज एवं सर्वग्राह्य भाषा है। अत: हमें अपने दैनिक कार्यों में हिंदी की टिप्पणियां एवं पत्रादि का अधिक से अधिक प्रयोग करना चाहिए ताकि राजभाषा में कार्य करने का वातावरण सृजित हो सके ताकि राजभाषा विभाग द्वारा निर्धारित लक्ष्य प्राप्त किया जा सके।

इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि श्री अरुण कुमार, आयुक्त, केन्द्रीय वस्तु एवं सेवाकर, जयपुर ने अपने संबोधन के दौरान कहा कि जिस प्रकार शृंगार में बिंदी का महत्व है उसी प्रकार इस कार्यालय में हिंदी का महत्त्व है। इस कार्यालय में सभी स्तर के अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा अधिक से अधिक कार्य हिंदी में करके राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रचार में उत्कृष्ट भूमिका निभा रहे हैं।

राजभाषा पखवाड़े के दौरान आयोजित की गई प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार भी समारोह में निम्नानुसार प्रदान किए गए :-

हिन्दी निबन्ध प्रतियोगिता

	पुरस्कार	*नाम एवं पदनाम*	*राशि रु. में*
1.	*प्रथम पुरस्कार*	श्री देवेश कुमार शर्मा, निरीक्षक	1800/-

2.	*द्वितीय पुरस्कार*	श्री हेमंत कुमार शर्मा, निरीक्षक	1500/-
3.	*तृतीय पुरस्कार*	श्री विमल कुमार चौधरी, निरीक्षक	1200/-
4.	*सांत्वना पुरस्कार*	श्री सुधीर चन्द श्रीवास्तव, निजी सचिव	500 /-
5.	*सांत्वना पुरस्कार*	श्री राजेश पारीक , अधीक्षक	500 /-

हिंदी श्रुतलेख प्रतियोगिता :-

1.	***प्रथम पुरस्कार***	सुश्री सुरभि गुप्ता, निरीक्षक	1300/-
2.	*द्वितीय पुरस्कार*	श्री प्रेमराज जोगपाल, निरीक्षक	1100/-
3.	*तृतीय पुरस्कार*	श्री नवीन वर्मा, आशुलिपिक	900/-
4.	*सांत्वना पुरस्कार*	श्री मनीष कुमार, कर-सहायक	400/-
5.	*सांत्वना पुरस्कार*	श्री संतोष कुमार तिवारी, निरीक्षक	400 /-

हिन्दी टंकण प्रतियोगिता :-

1.	*प्रथम पुरस्कार*	श्री बिमल कुमार चौधरी, निरीक्षक	1200/-
2.	*द्वितीय पुरस्कार*	श्री विकास पाल, कार्यकारी -सहायक	900/-
3.	*तृतीय पुरस्कार*	श्री अमित कुमार जैन, निरीक्षक	700/-
4.	*सांत्वना पुरस्कार*	श्री रोहित प्रियदर्शी, कर-सहायक	300/-
5.	*सांत्वना पुरस्कार*	श्री अनिल बिर्ले, कर-सहायक	300/-

हिन्दी टिप्पण एवं आलेखन प्रतियोगिता :-

1.	*प्रथम पुरस्कार*	श्री प्रणव शर्मा, कर-सहायक	1600/-
2.	*द्वितीय पुरस्कार*	श्री राधेश्याम सैनी, प्रशासनिक अधिकारी	1300/-
3.	*तृतीय पुरस्कार*	श्री रामस्नेही जाट, निरीक्षक	1100/-
4.	*सांत्वना पुरस्कार*	श्री मुकेश जैन, निरीक्षक	500 /-
5.	*सांत्वना पुरस्कार*	श्री प्रदीप भूरिया, कर-सहायक	500 /-

कार्यक्रम में श्री सुभाष चन्द्र अग्रवाल, आयुक्त, सीमा शुल्क (निवारक), जोधपुर द्वारा एक शानदार कविता भी प्रस्तुत की गई। इसके अतिरिक्त, श्री विवेक श्रीवास्तव, अधीक्षक द्वारा श्री मंजूर अली अंसारी, अपर आयुक्त, सीमा शुल्क, जयपुर द्वारा रचित गजल भी पेश की गई जिसका सभी ने तालियों के साथ प्रशंसा की।

कार्यक्रम का संचालन श्री विवेक श्रीवास्तव, अधीक्षक, केंद्रीय वस्तु एवं सेवाकर अपील, आयुक्तालय, जयपुर द्वारा किया गया।

धन्यवाद ज्ञापन द्वारा सुश्री नीता शुल्क, वरिष्ठ अनुवादक, कार्यालय प्रधान आयुक्त, केंद्रीय वस्तु एवं सेवाकर आयुक्तालय, जयपुर द्वारा किया गया ।

अंत में इस समारोह का समापन नियमित रूप से हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग के संकल्प के साथ किया गया।

❑❑

जीएसटी दिवस समारोह–2019 के उपलक्ष्य में दिनांक 03.07.2019 को आयोजित रक्तदान शिविर में रक्तदाताओं के नाम

क्र.सं.	नाम एवं पदनाम (सर्वश्री/सुश्री/श्रीमती)
1.	महेश कुमार, अपर आयुक्त
2.	बी.एल. मीना, संयुक्त आयुक्त
3.	मनीष कुलहरि, संयुक्त आयुक्त
4.	नरेश बुन्देल, उपायुक्त
5.	मुकेश कटारिया, उपायुक्त
6.	एस.एल. परेवा, सहायक आयुक्त
7.	डॉ. पारूल सिंहल, सहायक आयुक्त
8.	प्रतीति गोयल, सहायक आयुक्त
9.	कमल कुमार छीपा, अधीक्षक
10.	दीपक पंजाबी, अधीक्षक
11.	सुनीता जैन, अधीक्षक
12.	नीता गोस्वामी, अधीक्षक
13.	बनवारी लाल, अधीक्षक
14.	सुधीर तिवारी, अधीक्षक
15.	जयवर्धन दायमा, निरीक्षक
16.	अमित कुमार जैन, निरीक्षक
17.	भंवर लाल बागोड़, निरीक्षक
18.	रोहिताश कुमार, निरीक्षक
19.	नितिन गुप्ता, निरीक्षक

क्र.सं.	नाम एवं पदनाम (सर्वश्री/सुश्री/श्रीमती)
20.	आशीष जैन, निरीक्षक
21.	देवेश कुमार शर्मा, निरीक्षक
22.	लेखराज दायमा, निरीक्षक
23.	दीपक शर्मा, निरीक्षक
24.	हरकेश कुमार मीना, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक
25.	पवन कुमार चौहान, कार्यकारी–सहायक
26.	महेश कुमार चौधरी, कर सहायक
27.	अनिल कुमार साहू, कर सहायक
28.	तन्मय प्रियदर्शी, कर सहायक
29.	अतुल कुमार शर्मा, कनिष्ठ लिपिक
30.	हेमन्त खोंलिया, कनिष्ठ लिपिक
31.	योगेश कुमार शर्मा, सी.ए.
32.	योगेश कुमार शर्मा, हैड हवलदार
33.	सूरज सैनी, वाहन चालक
34.	महेन्द्र सिंह गुर्जर, सुरक्षा कर्मचारी
35.	मनीष कुमार जांगिड़, कंटीजेंट
36.	विष्णु प्रसाद शर्मा, कंटीजेंट
37.	नवीन कुमार, कंटीजेंट
38.	गणेश प्रजापत, कंटीजेंट

उत्कृष्ट सेवाओं के लिए राष्ट्रपति पुरस्कार

श्री प्रमोद कुमार सिंह, प्रधान आयुक्त, केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर व उत्पाद शुल्क आयुक्तालय, जयपुर को सेवा के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान देने के लिए राष्ट्रपति पुरस्कार हेतु चयनित होने के उपलक्ष्य में सीजीएसटी परिवार, राजस्थान आपको हार्दिक बधाइयां देता है।

राजप्रभा के 25वें अंक का विमोचन कार्यक्रम

जीएसटी 1 राष्ट्र कर बाजार

केंद्रीय वस्तु व सेवाकर एवं सीमा शुल्क, जयपुर

नव केंद्रीय राजस्व भवन, स्टेच्यू सर्किल, जयपुर